उपनिषद्-सुधा बिन्दु

सितम्बर २००८

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम् ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते॥१/५॥

जिसको कोई मन से नहीं समझ सकता, प्रत्युत जिसकी शक्ति से मन पदार्थों आदि को समझ सकता है, उसको ही तू ब्रह्म जानह्लह्लजिसकी लोग यहाँ (इस लोक में) उपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है।

साधना की विभिन्न विधियाँ

जो कर्मयोग के पथ का अनुसरण करना चाहते हैं, उन्हें पीड़ित मानवता तथा समाज के लिए अनेक प्रकार से निष्काम सेवा करनी चाहिए। आपको ईश्वरार्पण की भाँति भगवान् को कर्म-फलों को अर्पित कर देना चाहिए। यह स्वीकार कर कि आप भगवान् के हाथों में उपकरण मात्र हैं, आपको कर्ता-भाव को त्याग देना चाहिए। आपको स्वार्थता त्याग देनी चाहिए और इन्द्रियों पर नियन्त्रण करना चाहिए। आपको मानवता की सेवा में अपना सारा जीवन समर्पित कर देना चाहिए। आपको सोचना चाहिए कि यह सम्पूर्ण जगत् ईश्वर का प्रकट स्वरूप है। आपको इसी भाव से मानवता की सेवा करनी चाहिए। आपका हृदय शीघ्र पवित्र हो जायेगा। आप चित्त-शुद्धि के द्वारा आत्मा का ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह कर्मयोगियों हेतु साधना है। यह आध्यात्मिक पथ के सभी नवाभ्यासियों हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

यदि आप भक्ति के पथ का अनुसरण करें, तो आपको जप करना चाहिए तथा भागवत या रामायण जैसे पवित्र ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिए। आपको नवधा भक्ति का अभ्यास करना चाहिए। आपको व्रत और अनुष्ठान करना चाहिए, प्रार्थना और मानसिक पूजा करनी चाहिए। चूँकि भगवान् सभी प्राणियों में वास करता है, अतः आपको मानवता की सेवा भी करनी चाहिए।

एक राजयोगी भी आठों अंगों के अभ्यास द्वारा योग-सीढ़ी पर धीरे-धीरे चढ़ता है। आपको शरीर तथा मन को स्थिर रखने के लिए और नाड़ियों को शुद्ध करने के लिए आसन और प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। तत्पश्चात् प्रत्याहार, धारणा एवं ध्यान के अभ्यास से आप समाधि में प्रविष्ठ हो जायेंगे।

जो वेदान्त या ज्ञानयोग का पथ अपनाते हैं, उन्हें प्रथम चार साधनोंह्लह्लविवेक, वैराग्य, षडसम्पत् और मुमुक्षुत्व को अर्जित करना चाहिए, तत्पश्चात् उन्हें एक ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास जाना चाहिए और उनसे सत्य का श्रवण करना चाहिए। उपर्युक्त श्रवण, मनन और निदिध्यासन (ध्यान) के द्वारा वे आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करेंगे।

ज्ञानी अन्त में आनन्द के साथ घोषित करता हैह्लह्ल‘‘आत्मा एक है, आत्मा ही एकमात्र सत्य है। मैं ब्रह्म हूँ। **अहं ब्रह्मास्मि। शिवोऽहं। सर्वं खल्विदं ब्रह्म।**’’ जीवन्मुक्त सभी प्राणियों में आत्मा को तथा आत्मा में सभी प्राणियों को देखता है।

स्वामी शिवानन्द

जीवन का उद्देश्य

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

मनुष्य का जीवन यह परिलक्षित करता है कि उसके परे क्या है तथा वह कौन-सी शक्ति है जो उसके विचारों, भावनाओं तथा कर्मों की नियामक है। विशालतर जीवन अदृश्य है तथा यह दृश्य जीवन उस अदृश्य वास्तविक जीवन की ही छाया मात्र है। छाया से वस्तु को हम समझ सकते हैं तथा इस छाया को जान कर हम उस सत्य वस्तु की प्राप्ति के मार्ग का अवलम्बन कर सकते हैं। सीमाओं, अभाव तथा नाना प्रकार की अशान्ति, असन्तोष तथा दुःख आदि से मानव-अस्तित्व आक्रान्त है। इससे यह परिलक्षित होता है कि इसका एक उन्नत अभीप्सित लक्ष्य हैह्नह्नभले ही वह लक्ष्य बुद्धि से अतीत है।

इस पृथ्वी पर जीवन सतत परिवर्तनशील है तथा यहाँ की किसी वस्तु में भी सत्य का लक्षण नहीं पाया जाता और यही कारण है कि कुछ भी मनुष्य को पूर्ण तृप्त नहीं कर सकता। श्रीमद्भगवद्गीता ने इस जगत् को **'अनित्यम्, असुखम्, दुःखालयम्, अशाश्वतम्'** बतलाया है। प्राचीन काल के ऋषियों ने स्वानुभव से यह घोषित किया था कि 'सत्य एक है' और इस सत्य का साक्षात्कार तथा अनुभव करना ही मानव-जीवन का लक्ष्य है।

यह जगत् विषम है, यह अस्थायी है। यह जीवों के लिए अनुभव-क्षेत्र है, जिससे वे परम सत्य की अनुभूति की ओर प्रगति कर सकें। भारतवर्ष के लोगों के लिए यह गौरव की बात है कि उनके लिए यह दृश्य जगत् सत्य नहीं है तथा वह अदृश्य नित्य-वस्तु ही सत्य है। इन्द्रियों से ग्राह्य विषयों में उनकी जरा भी आस्था नहीं है। उनकी श्रद्धा एकमेव उसी में है जो सभी अनुभवों का आधार है, जो इन्द्रियातीत है तथा जो मन से भी परे है।

सच्चे साधक उन महर्षियों की शरण लेते थे जो कि अपनी भव्य उपस्थिति से हिमालय के पावन प्रदेश को पवित्र बनाते थे और इहलौकिक जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा प्राप्त करने तथा परब्रह्म के आनन्द में लीन होने के लिए तपोमय यौगिक जीवन व्यतीत करते थे और इसे वे सच्चा जीवन तथा नित्य-वस्तु के नियम की पूर्ति का एकमेव मार्ग समझते थे।

विधि-नियामक महर्षि मनु धर्म के विविध सिद्धान्तों की व्याख्या करते हुए अन्त में कहते हैंह्नह्न''इन सभी धर्मों में आत्मज्ञान ही परमोत्कृष्ट है। यही सभी विद्याओं में श्रेष्ठ है; क्योंकि इसके द्वारा अमरत्व की प्राप्ति होती है।'' धर्म, अर्थ, काम आदि पुरुषार्थों का तात्पर्य मोक्ष ही है जो परम पुरुषार्थ है। धर्म जीवन का आचारिक मूल्य है, अर्थ भौतिक मूल्य है, काम प्राणिक मूल्य है; परन्तु मोक्ष तो अस्तित्व का असीम मूल्य है, जिसमें अन्य सभी सम्मिलित हैं तथा यह स्वतः उन तीनों से बहुत ही श्रेष्ठ है। अन्य तीन इस मोक्ष के लिए ही सहायक रूप हैं। मोक्ष के बिना उनका कोई मूल्य नहीं तथा उनसे कोई तात्पर्य नहीं । उनका

मूल्य उस असीम के नियम द्वारा परिच्छिन्न है जो कि मोक्ष का ही पर्यायवाची है।

वेद तथा उपनिषद् ईश्वर के ही प्रश्वास हैं तथा उनमें आध्यात्मिक जीवन की प्रशस्त व्याख्या है। उनमें मानव-जीवन के उद्देश्य तथा तात्पर्य की व्याख्या दी गयी है और वह साधन भी बतलाया गया है जिससे मर्त्य अस्तित्व को अमृतत्व में परिणत किया जा सके। महान् नचिकेता का उदाहरण तथा उनकी सत्य की साहसिक खोज का कथानक सभी मनस्वियों एवं विचारकों के लिए जाज्वल्यमान आदर्श उपस्थित करता है।

नचिकेता ने अपने सुस्मरणीय त्याग के द्वारा इस सत्य की शिक्षा दी थी कि इस विषय-जगत् की किसी भी वस्तु का वास्तविक मूल्य नहीं। सुदीर्घ जीवन तथा अक्षय धन-राशि द्वारा भी वह प्रलोभित नहीं हुए। वह परम सत्य की खोज में संलग्न रहे तथा अन्ततः उन्हें सत्य का साक्षात्कार हुआ ही। इससे कम वह किसी भी वस्तु से सन्तुष्ट न हो सके। ये सच्चे धीर हैं। सच्चा धीर वह नहीं जो घनघोर संग्राम में अडिग खड़ा रहे अथवा आपत्तिपूर्ण प्रयासों में अपने जीवन को जोखिम में डाल दे, युद्ध करे, समुद्र में गोता लगाये और पर्वत के ऊँचे शिखरों पर चढ़े; धीर वह है जो अपनी इन्द्रियों का दमन करता है तथा अपने मन पर विजय प्राप्त करता है, जो जीवन की परम एकता का साक्षात्कार कर सारे द्वैत एवं कामनाओं का परित्याग कर देता है। इसको प्राप्त करना ही मनुष्य का कर्तव्य है। यही औपनिषदिक ऋषियों का अमर सन्देश है।

मनुष्य विषयानुभूति के जंजाल में फँसा हुआ है। इससे अपने को मुक्त बनाना कठिन है। मनुष्य वस्तुओं के तथाकथित बाह्य सम्बन्धों को सत्य मान कर विमोहित हो रहा है तथा इसके फल-स्वरूप वह शोक में निमग्न होता है। महाभारत कहता है :

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ।
समेत्य च व्यपेयातां तद्वद्भूतसमागमः॥

(शान्ति-पर्व)

ह्लह्लइस जगत् में प्राणियों का मिलन नदी में काष्ठ के मिलन के समान ही अनित्य एवं अस्थिर है। फिर भी इन्द्रिय-ग्राह्य वस्तुओं के साथ आसक्ति इतनी दृढ़ है कि कल्पनाओं को तथ्य, अशुद्ध वस्तु को शुद्ध, दुःख को सुख तथा अनात्मा को आत्मा मान बैठने की भूल करते हैं।

प्राचीन ऋषियों का यह सन्देश है कि मनुष्य विषय-जगत् में जो जीवन जीता है, वह भ्रामक है; क्योंकि यह सार्वभौम आत्मिक सत्ता को आवृत कर इन्द्रिय-गोचर, नाम-रूपात्मक विषयों को ही सत्य दिखलाता है। मूर्ख जन ही बाह्य सुखों के पीछे दौड़ते हैं तथा सुविस्तृत मृत्यु-जाल में जा फँसते हैं; परन्तु धीर जन अमृतत्व को जान कर अनित्य वस्तुओं में उस नित्य-वस्तु की खोज नहीं करतेह्लह्लऐसा उपनिषद् कहती है। प्राचीन ऋषियों का मनुष्य के लिए यह सन्देश हैह्लह्ल''हे अमृत-पुत्र! स्वयं को असीम जानो, सब बन जाओ। यही परम कल्याण है। यही परमानन्द है।'' यही मनुष्य के लिए अमर सन्देश है।

ऋषियों ने बारम्बार इस बात पर बल दिया हैह्लह्ल''यदि मनुष्य उस अमृत को यहाँ जान ले, तो उसकी सारी इच्छाओं की समाप्ति हो जायेगी। यदि वह उसे यहाँ न जाने, तो उसके लिए महान् हानि है'' (केनोपनिषद्)। ऋषि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि उस

अक्षय सुख के ज्ञान के बिना इस संसार में किये गये सारे महान् कार्य कुछ भी मूल्य नहीं रखते। परोपकार-कर्म, उपवास तथा दान और राजनैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवनह्नह्नयह सब विश्व-बन्धुत्व की भावना पर आधारित होने चाहिए; क्योंकि विश्व-बन्धुत्व सार्वभौमिक आत्मानुभव की बाह्य अभिव्यक्ति है।

मानव-जाति तभी शान्ति की आशा कर सकती है, जब ऋषियों द्वारा खोज निकाले तथा बतलाये हुए दिव्य नियमों का वह अनुसरण करे। दिव्य नियमों को जीवन में जितना अधिक उतारा जायेगा, उतनी ही अधिक शान्ति की प्राप्ति होगी। शरीर के प्रति प्रेम, अहं तथा इसका उस विश्व के साथ सम्बन्ध जिसमें मानवता प्राय: पड़ी हुई है, जितनी मात्रा में कम होगा उतनी मात्रा में शान्ति अधिक होगी। इस जगत् के प्रति आसक्ति जितनी मिटती जायेगी, उतना ही शान्ति का उदय होता जायेगा। उन्नत चैतन्य के जागरण की आवश्यकता है जिससे वैषम्य एवं असन्तोष को दूर किया जा सके।

विश्व-शान्ति के लिए मानव-जाति को ठीक दिशा में शिक्षित करना एक पूर्वापेक्षा है। भौतिकवाद, नास्तिकवाद, संशयवाद तथा अज्ञेयवादह्नह्नइनका आज बोल-बाला है और इनके कारण मनुष्य परमात्मा में विश्वास न रख कर, विश्व को उद्वेलित करने वाले स्वार्थ, तृष्णा, मोह, हिंसा तथा मन के विक्षेपों में अधिकाधिक निमग्न होता जा रहा है। मनुष्य को यह सीखना चाहिए कि इस पदार्थ-जगत्, नानात्व, अनित्यत्व तथा सन्दिग्धता के पीछे आध्यात्मिक एकता, असीमता तथा सुरक्षा है।

इस सत्य के साक्षात्कार के बिना यह जीवन जीवन नहीं रह जाता। वह पोला, निरर्थक, उद्देश्यहीन तथा मृतवत् बन जाता है। ईश्वर में जीवन-यापन का अर्थ हैह्नह्नइन्द्रिय-जगत् के संकीर्ण जीवन को मृत बनाना। इन्द्रिय-जगत् में ही निमग्न रहना 'आत्म-हनन' है। आधुनिक जीवन-प्रणाली का रूपान्तरण करना होगा तथा उसमें नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना का पुनर्जागरण करना होगा। यह परिवर्तन केवल बाह्य रूप में ही न हो, वरन् जीवन के आन्तरिक गठन में भी प्रवेश करे।

यह तभी सम्भव है, जब मनुष्य अपने आदर्शों को आत्मा की एकता पर आधारित करे तथा अन्ध-विश्वास, भौतिकता एवं नानात्व-बुद्धि से ऊपर उठे। यदि मनुष्य ने यह प्राप्त कर लिया, तो उसका इहलौकिक परम कर्तव्य पूर्ण हो गया। जलहीन सांसारिकता के मरुस्थल में झुलसते हुए मनुष्यों के लिए औपनिषदिक ऋषियों के सर्वोच्च अनुभवों से निस्सृत ज्ञान-गंगा ही एकमेव आशा है। इस शाश्वत प्रवाह से जल पीजिए तथा अपने को स्फूर्त बनाइए।

(अनूदित)

साधक के जीवन में नियमितथा का बड़ा महत्त्व है। आपत्काल में भी नियमित कार्य अवश्य करना चाहिए, भले ही उन्हें स्वल्प-काल तक अथवा स्वल्प मात्रा में करें। साधना में नियमित अभ्यास तथा दृढ़ निश्चय परमावश्यक हैं। साधना में अनियमित होने से मन बड़ा चंचल हो जाता है। मनोनिग्रह के अभाव में साधना सम्भव नहीं है। नियमितथा मन का निग्रह करने में भी सहायता करती है। **स्वामी चिदानन्द**

आप जो हैं और जो करते हैं, केवल उसी का महत्त्व है

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उन श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी को प्रेमपूर्वक नमन करते हैं, जिन्होंने जो-कुछ भी कर सकते थे, वह सब-कुछ किया और किसी भी सीमा तक तो जो अन्य कोई भी नहीं कर सकता, वह सब-कुछ परम आनन्द के पथ पर प्रकाश डालने के लिए उन्होंने किया। उन्होंने हमें जीवन जीने का ढंग सिखाया और इस पथ पर चलने के लिए जो-कुछ भी करना आवश्यक है, वह सब केवल करके ही नहीं दिखाया, प्रत्युत विस्तार सहित हमारे सामने रख दिया ताकि हम इस जीवन को जीते हुए, इस रास्ते पर चल कर, इसी शरीर से ही परम आनन्द की प्राप्ति कर लें। यहाँ पर इस समय उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति पर उनके प्रेमपूर्ण आशीर्वाद हों, जिससे कि हम सब अपने आध्यात्मिक जीवन में व्यावहारिक बनें, जिससे कि हम अधिक जानने की अपेक्षा अधिक अच्छा बनने और करने पर बल दें।

क्योंकि भगवान् की दृष्टि में आप जो हैं, उसी का महत्त्व है। आप जो करते हैं, उसी का फल प्राप्त होता है; जो जानते हैं, उसका नहीं। आप सब देवर्षि नारद की कथा जानते हैं जिन्हें सब-कुछ जानने योग्य जान लेने पर भी मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं थी। वह अपनी समस्या को सनत्कुमार के पास ले कर गये और कहाह्नह्न''जो-कुछ भी ज्ञातव्य था, वह सब मैंने जान लिया है, मुझे अपार ज्ञान प्राप्त है, तो भी मुझे सुख नहीं है, मैं मानसिक कष्ट में हूँ, मुझे आन्तरिक शान्ति नहीं है।''

सनत्कुमार ने पूछाह्नह्न''आपने क्या जाना है? क्या कुछ अध्ययन किया है? क्या ज्ञान प्राप्त किया है?''

नारद जी ने सम्भवतया उस समय तक उपलब्ध समस्त सद्ग्रन्थों का उल्लेख अपने उत्तर के रूप में कर दिया। तब उन्होंने कहाह्नह्न''आपका अध्ययन प्रशंसनीय है, आपका ज्ञान उल्लेखनीय है; किन्तु परम तत्त्व की प्राप्ति धर्मग्रन्थों में बताये गये मार्ग पर चलने से ही होती है।'' आत्मज्ञान प्रवचन सुनने से नहीं होता, न ही बड़ी-बड़ी व्याख्याओं के श्रवण से होता है : **''नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन''** (इस आत्मा की प्राप्ति न तो वेदाध्ययन से होती है, न बुद्धि के द्वारा और न ही अत्यधिक ज्ञान-प्राप्ति से होती है)।

अत: यदि हम सचमुच परम आनन्द पाना चाहते हैं, यदि हम वास्तव में ही परम तत्त्व की प्राप्ति करना चाहते हैं, उस अवर्णनीय परमानुभूति को प्राप्त करना चाहते हैं, जो तत्क्षण ही अनिर्वचनीय शान्ति, परम सुख व आनन्द प्रदान करने वाली है, तो हमें वैसा ही जीवन जीना होगा जैसा महापुरुषों ने जिया और हमें जीना सिखाया है। उन्हीं के पद-चिह्नों पर हमें चलना होगा, **'महाजना येन गत: स पन्था:'**। जैसे वह

जिये वैसा ही जीवन जियें, आपको वही परमानन्द और दिव्य परिपूर्णता की, परम प्रकाश और मोक्ष की अवस्था की प्राप्ति होगी। ऐसा ही हमें बताया गया है।

कई बार विचार आता है कि इतने प्रवचन और विचार अभिव्यक्त करने का क्या लाभ है। दक्षिणामूर्ति ने मौन रह कर उपदेश दिया। महान् गुरु यीशु ने भी बहुत अधिक श्रोताओं को सम्बोधित नहीं किया। उनके कहे गये शब्दों को मात्र छोटी-सी पुस्तिका में सँजोया जा सकता है। भगवान् बुद्ध दीर्घ काल तक रहे और उनके विषय में बहुत-कुछ लिखा हुआ प्राप्त होता है, किन्तु उनके द्वारा दिये गये उपदेश भी संक्षिप्त-सी पुस्तिका में समा जाने वाले हैं।

फिर भी उनकी शिक्षाएँ लोगों के हृदयों में समाहित हैं और समय के साथ-साथ पुन: नवीन शक्ति से सम्पन्न हो कर नये सिरे से पुनर्जीवित होती रही हैं; क्योंकि उनके उपदेशों को जीवन में उतार कर अभ्यास किया गया था। वे यह जानते थे कि हम जो हैं और जो करते हैं, केवल उसी का फल मिलता है, अत: उनके उपदेशों में, उनके द्वारा निरन्तर नव-जीवन संचार किया जाता रहा है। उन्होंने इन महान् उपदेशों को अपने दैनिक जीवन में गहन अभ्यास करके स्वयं को उन उपदेशों की साकार प्रतिमा बना लिया, इसीलिए उनके शब्द आज भी हमारे लिए जीवन्त सत्य बने हुए हैं।

भली-भाँति चिन्तन करें। उपनिषद् भी अत्यन्त छोटी-छोटी पुस्तकें हैंह्नह्नकोई केवल अठारह पदों की, कोई चौबीस की; किन्तु उनमें हमारी आदिकालीन चिर-नूतन भारतीय ज्ञान-परम्परा का सत्त्व निहित है।

जब हम इन सत्यों पर चिन्तन करते हैं, तो हम वास्तव में यह अनुभव करते हैं कि बहुत अधिक कहना-सुनना अनावश्यक है तथा थोड़ा-सा भी करनाह्नह्नयही आध्यात्मिक जीवन का सार है। अत: सब-कुछ जान लेने की अपेक्षा, कुछ बन जाने और कुछ कर लेने का ही सबसे अधिक महत्त्व है। विद्वत्ता प्रशंसनीय है। बहुत अधिक सीख लेना, ज्ञान प्राप्त कर लेना भी अच्छा है; किन्तु व्यक्ति को यह निश्चित रूप से जान लेना चाहिए कि केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है।

यह बोध, यह समझ हमें एक बड़े कार्य की ओर, व्यावहारिक और क्रियान्वित आध्यात्मिक जीवन की ओर बढ़ाये! महान् गुरुओं के उपदेशों को जीवन में उतारने की ओर अग्रसर करे! यही एक करने योग्य कार्य है। ईश-कृपा हमें यह क्षमता प्रदान करे कि हम व्यावहारिक आध्यात्मिक जीवन जी कर, अपने दैनिक जीवन में दिव्यता ला कर परमात्मा की कृपा के योग्य बन सकें!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

कोठी-बँगले में कितने ही तार के जाल बिछे हों, कितने ही सुन्दर बल्ब लगे हों; किन्तु बिना विद्युत् के प्रकाश सम्भव नहीं है। इसी प्रकार बिना प्राण के यह शरीर व्यर्थ है, मिट्टी है। जिसने हममें प्राण फूँका है, उसे जानना चाहिए। वही हमारा पिता है, वही हमारी माता है। जो-कुछ हमने पाया है, वह सब उसी परम पिता परमात्मा की कृपा की देन है। हम उसे भूल कर भी याद नहीं करते और वह हमें भूल से भी नहीं भूलता। **स्वामी चिदानन्द**

पूर्व-अंक से आगे :

कामावेग की कार्य-प्रणाली

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

अपने मानसिक ब्रह्मचर्य को कैसे मापें

एक सुन्दरी युवती का वीक्षण एक कामुक व्यक्ति के मन में आकर्षण तथा संक्षोभ, हृदय-भेदन तथा गम्भीर उन्माद उत्पन्न करता है। यदि किसी व्यक्ति में ये लक्षण विद्यमान नहीं हैं, तो यह उसके ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित होने के चिह्न का द्योतक है। पशु-पक्षियों के जोड़ा खाने अथवा युग्मन अथवा एक महिला के अनावृत शरीर के दृश्य से रंचमात्र भी संक्षोभ उत्पन्न नहीं होना चाहिए।

यदि रुग्णावस्था-काल में ब्रह्मचारी के मन में स्त्री के संग की भावना उठती है, यदि उसकी संगति में रहने की प्रबल कामना है, यदि उसके साथ वार्तालाप करने, खेलने तथा हास-परिहास करने की इच्छा है, यदि एक सुन्दरी युवती को देखने की चाह है, यदि उसकी दृष्टि अपवित्र तथा व्यभिचारी है और यदि शरीर में पीड़ा के समय स्त्री के हाथों के स्पर्श की कामना है, तो स्मरण रहे कि उनके मन में कामुकता अभी भी छिपी हुई है। उसमें तीव्र यौन-लालसा है। इसे नष्ट करना चाहिए। पुराना चोर अब भी छिपा हुआ है। ऐसे ब्रह्मचारी को बहुत ही सावधान रहना चाहिए। वह अब भी खतरे के क्षेत्र के भीतर ही है। उसने ब्रह्मचर्य की अवस्था को प्राप्त नहीं किया है। स्वप्न में भी मन में नारी के स्पर्श अथवा संग की लालसा नहीं उठनी चाहिए। व्यक्ति के ब्रह्मचर्य की माप स्वप्न में हुई उसकी अनुभूतियों के द्वारा की जा सकती है। यदि व्यक्ति स्वप्न में कामुक विचारों से पूर्णतः मुक्त रहता है, तो वह ब्रह्मचर्य की पराकाष्ठा को पहुँच गया है। आत्म-विश्लेषण तथा आत्म-निरीक्षण व्यक्ति के मन की दशा के निर्धारण के लिए अपरिहार्य आवश्यकताएँ हैं।

ज्ञानी को स्वप्न-दोष नहीं होते। जो ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित है, वह एक भी दुस्स्वप्न नहीं देखता। स्वप्न हमारी मानसिक दशा अथवा मानसिक शुद्धता की मात्रा आँकने की कसौटी का काम करता है। यदि आपको अशुद्ध स्वप्न नहीं दिखता, तो आप ब्रह्मचर्य में प्रगति कर रहे हैं।

काम-भाव ही मन से लुप्त हो जाना चाहिए। शुकदेव को ऐसी अनुभूति थी। शुकदेव ने विवाह नहीं किया। वह अपना गृह त्याग कर विशाल विश्व में नंग-धड़ंग विचरण करने लगे। उनके पिता व्यास के लिए यह पुत्र-वियोग बहुत ही दुःखदायी था। व्यास अपने पुत्र की खोज में बाहर निकल पड़े। जब वे एक सरोवर के पास से जा रहे थे, अप्सराएँ जो स्वच्छन्द जलक्रीड़ामग्न थीं, लज्जित हो गयीं और उन्होंने शीघ्र ही अपने वस्त्र धारण कर लिये। व्यास ने कहा : ''निस्सन्देह यह एक आश्चर्य की बात है। मैं वृद्ध हूँ और वस्त्र धारण किये हूँ; किन्तु जब मेरा पुत्र इस मार्ग से विवस्त्र अवस्था में गया, तब आप सब शान्त तथा अप्रभावित रहीं।'' अप्सराओं ने उत्तर दिया : ''पूज्य ऋषिवर! आपके पुत्र को स्त्री-पुरुष का भेद ज्ञात नहीं है; किन्तु आपको ज्ञात है।'' **(क्रमशः)** **(अनूदित)**

पूर्व-अंक से आगे :

स्वप्न और सुषुप्ति का रहस्य : हिरण्यगर्भ

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

प्रत्येक मनुष्य हीन भावना (complex) का शिकार है। एक नहीं अनेक विषमताएँ उसे घेरे रहती हैं। निराशा और पराजय के भाव ही समयोपरान्त हीन भावना के उद्‌भव का कारण बन जाते हैं। प्रथमत:, इच्छा जाग्रत होती है और सभी इच्छाएँ पूर्ण भी नहीं होतीं, क्योंकि 'सत्यता' के नियम का पालन भी आवश्यक होता है। ऐसा मनोवैज्ञानिकों का कथन है। समाज की सत्यता है, बाह्य जगत् की सत्यता है जो आपकी इच्छाओं का विरोध करती है। समाज का अपना एक नियम होता है जो समस्त मानवीय इच्छाओं की अभिव्यक्ति की आज्ञा नहीं देता। अत: मनुष्य निग्रहकारी क्रियाओं से इच्छाओं को भीतर ही दमन कर लेता है। समाज से बाहर सत्यता का समन्वित रूप दिखाने के लिए मन शमन और दमन, इन दो युक्तियों का प्रयोग करता है; किन्तु यह मिथ्या आविर्भाव सत्यता की प्रतीति नहीं कराता। इच्छाओं का दमन करने पर मनुष्य में कृत्रिम भाव झलकने लगता है। मनुष्य वह नहीं रहता, जो वह है। दीर्घ काल पर्यन्त ऐसा करने पर निग्रहीत संस्कार हीन भावना को जन्म देते हैं। मानसिक हीन भावनाएँ समय-समय पर शारीरिक व्याधि का रूप धारण कर सकती हैं। अस्पष्ट भाषण (हकलाना), बधिरता (बहरापन), अन्धता, भोजन में अरुचि, यकृत (liver) का कार्य न करना, और तो और लँगड़ापन आदि ऐसे मनोविकार हैं जिनका आविर्भाव दबी हुई इच्छाओं और हीन भावनाओं के कारण होता है जिन्हें भीतर ही भीतर दीर्घ काल पर्यन्त दबा कर रखा गया है। उनका कथन है कि अनेक वर्षों से सतत ऐसा ही करते आ रहे हैं और यदि यह कहा जाये कि जन्म-जन्मान्तरों से ऐसा ही करते आ रहे हैं, तो अतिशयोक्ति न होगी। हम लोग तनावों, हीन भावनाओं और कृत्रिम परिस्थितियों के मानो राशिपुंज हैं। यही है जीव-भाव, कठिनाई, तनाव, दु:ख। ऐसी परिस्थिति दु:ख से विश्राम हेतु इच्छापूर्ति के लिए स्वप्न का कारण बनती है। जिन इच्छाओं को हठपूर्वक निग्रहीत किया गया था, वे इच्छाएँ स्वप्न में अभिव्यक्ति प्राप्त करती हैं, जब इच्छा (will) निष्क्रिय होती है। जाग्रत जगत् में सभी इच्छाएँ क्रियान्वित नहीं हो सकतीं, क्योंकि 'सत्यता' विद्यमान है बाहर से उनका विरोध करने के लिए। लोगों के समक्ष आप अपनी इच्छाओं का ढोल तो नहीं पीट सकते न! वे आपका विरोध करेंगे, आपका अपमान करेंगे और आपका जीना कठिन कर देंगे। इच्छाएँ भी तो अल्प बुद्धि नहीं हैं। वे भी समझती हैं कि अभिव्यक्ति कहाँ करनी है और कहाँ नहीं करनी। किन्तु स्वप्न जगत् में बाह्य सत्यता की ओर से ऐसी कोई बाधा नहीं है। वहाँ कोई भी मन, कोई युक्तिवाद (तर्क) क्रियाशील नहीं होते। वहाँ तो केवल सहज ज्ञान ही क्रियाशील होता है। वहाँ तो आप एक सहजज्ञानसिद्ध (स्वाभाविक) जगत् में होते हैं। आपका वास्तविक अस्तित्व न्यूनाधिक स्वप्न जगत् में अभिव्यक्त होता है।

अत: स्वप्न हठपूर्वक निग्रहीत इच्छाओं के कारण आते हैं। स्वप्न आने का यह एक कारण तो है, किन्तु पश्चिमी जगत् के मनोविश्लेषक केवल इसे ही स्वप्न का कारण मानते हैं। भारतीय मनोवैज्ञानिक एवं मनोविश्लेषक जैसे राजयोगी और वेदान्त के दार्शनिकों ने स्वप्न के दूसरे पक्ष को हृदयंगम किया है।

कुछ सीमा तक स्वप्न अपूर्ण इच्छाओं से उद्भूत हीन भावनाओं का परिणाम हो सकते हैं, किन्तु यह पूर्णतया सत्य नहीं है। स्वप्न के अन्य कई कारण सम्भव हैं जिनमें से एक है कर्मों का व्यापार। जाग्रत जीवन में अभिव्यक्ति का अवसर न मिलने पर पूर्वकालिक शुभाशुभ कर्म स्वप्न में अपना विस्तार करते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि किसी अन्य व्यक्ति के विचार ने आपको प्रभावित किया हो। सम्भव है, आपका कोई मित्र आपको अत्यन्त स्मरण कर रहा हो और आप उसे स्वप्न में देखें अथवा आपके स्वप्न के अनुभव उस मित्र की विचारधारा के अनुरूप हों। आपकी माता जी कहीं दूर देश में आपके लिए व्याकुल हों और व्याकुलता का वह विचार आपको प्रभावित करे और स्वप्न में आप उनका दर्शन करें, यह भी सम्भव है। दूर स्थित एक मन के दूसरे मन पर प्रभाव के कारण अर्थात् टैलिपैथिक प्रभाव के कारण स्वप्न-दर्शन सम्भव है।

आध्यात्मिक साधकों के लिए गुरु-कृपा स्वप्न का कारण बन सकती है। गुरु-कृपा से जाग्रत-काल में आने वाली विपत्ति मात्र स्वप्न का अनुभव बन कर आपकी रक्षा कर सकती है। गुरु-कृपा से और गुरु की शक्ति से जाग्रत अवस्था में आने वाली विपत्ति स्वप्नावस्था की विपत्ति बन कर रह जाती है। किसी प्रारब्ध-कर्म-वश किसी साधक की यदि किसी दुर्घटना में टाँग टूटनी है, तो गुरु की कृपा से टाँग टूटने की वेदना आदि का अनुभव साधक को स्वप्न में ही हो जाता है। किसी को ज्वर आता है, तो यह अनुभव स्वप्न में हो सकता है। जागृति में आने वाली महती विपदा स्वप्न में आ कर टल जाती है। यह सब गुरु की अहेतुकी कृपा के कारण होता है। अत: शक्तिपात भी स्वप्न का कारण हो सकता है। पश्चिम के मनोविश्लेषक ये सब नहीं जानते। ईश्वर की कृपा भी स्वप्न का कारण बन सकती है। हो सकता है कि ईश्वर की कृपा-वृष्टि आप पर हो और स्वप्न में आपको कुछ विशेष अनुभव प्राप्त हों।

आपको शंका हो सकती है कि वे अनुभव जाग्रत अवस्था में क्यों नहीं प्राप्त हो सकते, ऐसा क्यों है कि गुरु केवल स्वप्न में ही कार्य करें और ईश्वर की अनुकम्पा भी स्वप्न में ही प्राप्त हो? इसका कारण यह है कि जाग्रत-काल में अहंभाव के वशीभूत हो कर आप उनके कार्य का विरोध कर सकते हैं। अपने अहंकार के कारण ही आप गुरु-कृपा और ईश्वर-कृपा का विरोध करते हैं। स्वप्न में यह अहंभाव कुछ सीमा तक शान्त रहता है। कहा जा सकता है कि उस अवस्था में आप अपेक्षाकृत अधिक सामान्य (normal) होते हैं और कृत्रिमता की अपेक्षा सत्यता के अधिक निकट होते हैं। अत: जाग्रत अवस्था की अपेक्षा स्वप्न में ये शक्तियाँ अपना कार्य सहज रूप से कर लेती हैं। जागृति में कार्यरत विरोधी अहंवृत्ति स्वप्न में शान्त हो जाती है और इस अवस्था में दिव्य शक्तियाँ सुचारु रूप से अपना कार्य कर सकती हैं। रोगी को स्वस्थ करने के लिए चिकित्सक भी पहले उसे निद्रा

लाने की औषधि देता है; क्योंकि जागृति में अहंभाव बाधा बन कर समक्ष आता है, जब कि स्वप्न और सुषुप्ति में ऐसा कोई विरोध नहीं होता। सम्मोहन क्रिया में रोगी को सुला दिया जाता है। शिराएँ शान्त करनी चाहिए, मन का उद्वेग शान्त होना चाहिए, मन द्वारा स्वास्थ्यकारी शक्तियों का विरोध नहीं होना चाहिए। इस प्रकार से गुरु अथवा ईश्वर की उच्चतर शक्तियों के कार्य करने के लिए स्वप्नावस्था अधिक अनुकूल है।

इस प्रकार स्वप्न के अनेक कारण हैं। जो भी कारण हो, मनुष्य में स्वप्न का कारण जाग्रत अवस्था के संस्कारों का परिणाम माना जाता है। जाग्रतकालीन दृश्य और बोध ही स्वप्न का कारण बनते हैं। स्वप्न जगत् केवल मन का विस्तार है और सूक्ष्म होने के कारण इसे 'प्रविविक्त' कहा जाता है जो स्थूल नहीं है। तैजस और हिरण्यगर्भ दोनों के लिए ऐसा ही कहा है। हिरण्यगर्भ के पास वैश्विक ज्ञान है; किन्तु जीव के पास ऐसा कोई ज्ञान नहीं है, कारण पहले बताया जा चुका है। हिरण्यगर्भ ईश्वर का स्वरूप है और तैजस जीव का स्वरूप है। इस प्रकार स्वप्न यह द्विविध रहस्य हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। (समाप्त)

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

***

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

सन्त और योगी २

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

श्री शंकराचार्य

श्री शंकराचार्य भारत के बहुत बड़े दार्शनिक थे। वे भगवान् शिव के अवतार थे। उन्होंने बहुत ही छोटी आयु में संन्यास ले लिया था। वे बड़े ज्ञानी थे। वे ईश्वर का वास्तविक स्वरूप जानते थे। हिन्दू-धर्म उन दिनों मिटने ही वाला था; क्योंकि बौद्ध-धर्म प्रबल होता जा रहा था। श्री शंकराचार्य ने उसे (हिन्दू-धर्म को) पुनर्जीवित किया। वे अद्वैत वेदान्त के परिपोषक थे।

उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता पर उन्होंने भाष्य लिखे हैं। सोलह वर्ष की अवस्था से पहले ही वे सारे ज्ञान में पारंगत हो गये थे। शास्त्रार्थ में उन्होंने सभी पण्डितों और विद्वानों को परास्त कर दिया। वेदान्त के प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए उन्होंने एक पुस्तक लिखी है, जिसका नाम 'विवेक-चूड़ामणि' है।

श्री शंकराचार्य ने लगभग १०८ ग्रन्थ लिखे हैं। भारत में जितने ज्ञानी पुरुष पैदा हुए हैं, उन सबमें श्री शंकराचार्य बड़े हैं। ३२ वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया। अपने जीवन की इसी स्वल्पावधि में उन्होंने सारे भारतवर्ष को जगा दिया। शंकराचार्य की जय हो!

गुरुनानक

सिख गुरुओं में गुरुनानक प्रथम हैं। सन् १४६९ में तलवण्डी नामक स्थान में उनका जन्म हुआ था। उस स्थान को आजकल 'ननकानासाहेब' कहते हैं। वे सिख-धर्म के प्रवर्तक हैं। वे बचपन से ही धर्मात्मा थे।

नानक के पिता कालूजी चाहते थे कि उनका पुत्र उन्हीं की तरह दुकानदारी करे। नानक ने पढ़ाई-लिखाई छोड़ कर सारा समय सन्तों के साथ बिताना शुरू किया।

ईश्वर की स्तुति में उन्होंने कई पद लिखे हैं। उन पदों को एक ग्रन्थ में संकलित किया गया है जिसका नाम है 'ग्रन्थसाहेब'। सिख इस ग्रन्थ की पूजा करते हैं। उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता स्थापित करने की कोशिश की। ७० वर्ष की आयु में सन् १५३९ में उनकी मृत्यु हुई।

श्री वसिष्ठ महर्षि

ब्रह्मा के पुत्रों में महर्षि वसिष्ठ जी परम तेजस्वी थे। ब्रह्मा के प्राण से उनका जन्म हुआ था। जन्म से ही वे ब्रह्मज्ञानी थे। आध्यात्मिक शक्ति में वसिष्ठ की बराबरी करने वाला कोई दूसरा ऋषि नहीं हुआ। वे साक्षात् भगवान् थे। उनकी शक्ति का वर्णन कठिन है।

विश्वामित्र नाम के एक ऋषि वसिष्ठ को हराना चाहते थे। विश्वामित्र ने हजारों वर्ष तक तपस्या की और कई दिव्य अस्त्र प्राप्त किये। अब वे वसिष्ठ से युद्ध करने लगे। वसिष्ठ ने केवल संकल्प-बल से उन सारे अस्त्रों को विफल बना दिया। विश्वामित्र कुछ न कर सके। उनके सौ पुत्र और सारी सेना वसिष्ठ की अन्त:शक्ति से नष्ट हो गयी। वसिष्ठ की अन्त:शक्ति की और वसिष्ठ की जय हो!

वसिष्ठ एक आदर्श महर्षि हैं। प्रतिदिन उनकी पूजा करो। 'योगवासिष्ठ' नामक ग्रन्थ में उनके सारे उपदेश मिलते हैं। **(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

योग द्वारा स्वास्थ्य :

अर्ध-मत्स्येन्द्रासन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

मत्स्येन्द्र शब्द यहाँ इस आसन का प्रशिक्षण देने वाले ऋषि या गुरु की ओर संकेत करता है।

विधि

भूमि पर पैरों को फैला कर बैठ जायें। दाहिना पैर घुटने से मोड़ें और एड़ी को दृढ़तापूर्वक मूलाधार पर लगायें। बायें पैर को घुटने से मोड़ें और हाथों के सहारे इसे भूमि से उठा कर दाहिनी जंघा के पार्श्व में इस प्रकार रखें कि बायाँ बाह्य गुल्फ दायीं जंघा के बाह्य भाग को स्पर्श करे। इस स्थिति में सुदृढ़ हो जायें और अग्र जंघा को भूमि पर लम्बतः रखें। अब ग्रीवा को बायीं ओर ९० अंश मोड़ें, जिससे कि दाहिनी काँख बायें घुटने के बाह्य भाग को स्पर्श करे। दायें हाथ को बायें घुटने के ऊपर से ले जा कर दाहिने हाथ से बायें पैर के अँगूठे को दृढ़तापूर्वक पकड़ें। बायाँ हाथ पीछे की ओर घुमा कर उससे दायीं जंघा को पकड़ने के लिए कटि के दायीं ओर ले जायें। शिर को बायें कन्धे के ऊपर मोड़ें और उस पर टकटकी लगा कर देखें। मेरुदण्ड को पूरा मरोड़ दें और स्थिति को दृढ़ करें। सामान्य श्वास-प्रश्वास के साथ आसन को बनाये रखें। मेरुदण्ड तथा श्वास-प्रश्वास पर धारणा करें। इस आसन में ३० सेकण्ड से एक मिनट तक रहें और फिर खोल दें। समय को धीरे-धीरे दो या तीन मिनट तक बढ़ायें। बायाँ पैर मोड़ कर इस प्रक्रम को दोहरायें।

लाभ

इस आसन का नियमित अभ्यास कटिवात तथा पीठ की पेशियों की पीड़ा को दूर करता है। मेरुदण्ड लचीला बनता है। मांसपेशियों तथा उदर-भाग के अंगों की मालिश होती है। मेरुदण्ड की स्नायुओं तथा अनुसंवेदी तन्त्र स्वच्छ तथा शुद्ध रक्त की अच्छी आपूर्ति के कारण शक्तिवान् बनते हैं। कोष्ठबद्धता तथा अग्निमान्द्य दूर हो जाते हैं। स्नायविक तन्त्र तथा मेरुदण्ड की कशेरुका को अच्छा व्यायाम मिलता है और वे शक्तिवान् हो जाते हैं।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

बाल-स्तम्भ

करुणा २

स्वामी रामराज्यम्

बच्चो, करुणा एक महान् गुण है। दूसरों के दु:खों को अपना दु:ख मान कर उन दु:खों में सचमुच दु:खी होना या दूसरों को दु:ख या कष्ट न पहुँचे, इसके लिए स्वयं दु:ख या कष्ट उठाने के लिए तैयार रहना करुणा है। करुणा के रस में भीग कर तुम करुणा-सागर भगवान् के प्रिय बनते हो और उनकी करुणा तुम्हारे ऊपर बरसने लगती है।

यहाँ हम तुम्हें करुणा के गुण पर प्रकाश डालने वाली कुछ सच्ची घटनाएँ बतला रहे हैं।

(१) 'इस विवशता के लिए मुझे क्षमा करें'

पण्डित श्रीनिवास शास्त्री एक विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे। उनके हृदय में करुणा का सागर लहराता रहता था। जब विश्वविद्यालय के प्राक्टर विद्यार्थियों को कोई दण्ड देते, तो वे (विद्यार्थी) शास्त्री जी के पास पहुँच जाते और दण्ड को माफ करा लेते। अध्यापकों ने सोचा कि यदि ऐसा होता रहा, तो विश्वविद्यालय का अनुशासन बिगड़ जायेगा। एक दिन उन्होंने विनयपूर्वक यह बात शास्त्री जी से कही। उन्होंने यह भी कहाह्नह्न''नि:सन्देह आप करुणामय हैं; परन्तु...।''

शास्त्री जी ने कहाह्नह्न''करुणामय होना मेरी विवशता है। इस विवशता के लिए मुझे क्षमा करें।''

फिर शास्त्री जी ने उन्हें अपने बचपन की एक घटना सुनायीह्नह्न''मैं छोटा था। परिवार में गरीबी थी। माँ फ़ीस तक के लिए धन का प्रबन्ध नहीं कर पाती थी। कभी-कभी घर में कपड़े धोने के लिए साबुन भी नहीं होता था। एक दिन मैं गन्दे कपड़े पहने हुए कक्षा में चला गया। अध्यापक की दृष्टि मेरे गन्दे कपड़ों पर पड़ी। उसने मुझे डाँटा और आठ आना जुर्माना कर दिया। जिसके घर में साबुन खरीदने के लिए एक आना भी न हो, उसे आठ आने का जुर्माना भरना पड़े...।''

कहते-कहते शास्त्री जी की आँखें भर आयीं। उन्होंने कहाह्नह्न''इस घटना ने मेरे अन्दर करुणा के बीज बोये। तबसे मैं किसी भी विद्यार्थी की पूरी-पूरी परिस्थिति जाने बिना उसे दण्ड नहीं देता। कौन जाने, कौन कितना दु:खी हो! दु:खी को दण्ड भुगतना पड़ेह्नह्नयह तो कटे पर नमक छिड़कने जैसा है। दूसरों के दु:खों को अनदेखा न कर पाना और उन्हें जान कर करुणा से भर उठना मेरी विवशता है।''

(२) 'उसे पता चल जायेगा, तो दु:खी होगा'

भगवान् बुद्ध के जीवन के अन्तिम समय की घटना है।

भगवान् बुद्ध कुछ भिक्षुओं के साथ परिव्रजन कर रहे थे। मार्ग में एक गाँव पड़ा। वहाँ उनके एक शिष्य ने उनसे प्रार्थना कीह्नह्न''आज दोपहर का भोजन आप सब मेरे घर पर करें।''

शिष्य ने जंगल से लाये हुए ताजे कुकुरमुत्ते की सब्जी बनवायी। भगवान् बुद्ध ने जैसे ही उस सब्जी को मुँह में रखा, वह समझ गये कि वह खाने योग्य नहीं है; परन्तु वह कुछ बोले नहीं। वह चुपचाप खाते रहे।

उनके शिष्य ने विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़ कर उनसे पूछाह्ह''सब्जी अच्छी बनी है न?''

''हाँ, बहुत स्वादिष्ट है'', भगवान् बुद्ध ने उत्तर दिया।

भोजन करने के बाद भगवान् बुद्ध ने अपने शिष्य आनन्द से धीरे से कहाह्ह''मेरी थाली में सब्जी बच गयी है। इसे जमीन में गाड़ दो, ताकि कोई पशु-पक्षी इसे खाने न पाये। यह विषैली है।''

आनन्द ने आश्चर्य से पूछाह्ह''आपने पहले क्यों नहीं बताया?''

भगवान् बुद्ध ने संकेत से उसे चुप रहने को कहा। थोड़ी देर बाद वह बोलेह्ह''इस सब्जी के विषय में किसी से कुछ कहना नहीं, आतिथेय से भी न कहना। उसने बड़े प्रेम से हमें भोजन कराया है। उसे पता चल जायेगा कि सब्जी विषैली थी, तो वह बहुत दुःखी होगा।''

अपने आतिथेय से भगवान् बुद्ध ने कहाह्ह''तुम्हारे प्रेम ने भोजन में मिठास घोल दी। मैं बहुत सन्तुष्ट हूँ।''

इसके बाद भगवान् बुद्ध अस्वस्थ हो गये। उनके पेट में पीड़ा होने लगी। वमन भी हुआ। अन्त में वह मृत्यु को प्राप्त हुए।

आतिथेय को दुःख न हो, इसलिए करुणा-सागर भगवान् बुद्ध ने चुपचाप विष-सेवन कर लिया। यह है करुणा।

सूचना :

ॐ

स्कन्द-षष्ठी-महोत्सव

शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी भगवान् सुब्रह्मण्य का पवित्र स्कन्द-षष्ठी-महोत्सव **३० अक्तूबर से ४ नवम्बर २००८** तक मनाया जायेगा। आश्रम के 'भजन हाल' में प्रतिष्ठित भगवान् कार्तिकेय की मूर्ति की अभिषेक, अर्चना, पुष्पालंकार आदि से नित्य विशेष पूजा होगी। भगवान् के स्तुतिपरक ग्रन्थों का दैनिक पाठ भी होगा। उत्सव की समाप्ति पर अन्तिम दिन वैदिक मन्त्र, भजन, कीर्तन, गायन आदि के साथ बृहत् पूजा होगी।

हम सभी भक्तों को इस पवित्र पूजा में उपस्थित एवं सम्मिलित होने का हार्दिक निमन्त्रण देते हैं। अपने आगमन की पूर्व-सूचना देने की कृपा करें। जो भक्तगण **'व्यवस्थापक, श्री विश्वनाथ मन्दिर, पत्रालय शिवानन्दनगर २४९१९२, उत्तराखण्ड'** को पत्र द्वारा अपनी इच्छा व्यक्त करेंगे, उनके नाम से विशेष संकल्प के साथ पूजा की जायेगी।

आप सब पर भगवान् स्कन्द की कृपा रहे! **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

आप अपने भाग्य के स्वामी हैं

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

साहस आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है, भय नहीं। शान्ति आपकी पैतृक सम्पत्ति है, अशान्ति नहीं। अमरत्व आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है, मृत्यु नहीं। बल आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है, दुर्बलता नहीं। स्वास्थ्य आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है, शोक नहीं। ज्ञान आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है, अज्ञान नहीं।

दु:ख, शोक तथा अज्ञान भ्रामक हैं, वे नित्य नहीं हैं। सुख, आनन्द तथा ज्ञान सत्य हैं, वे कभी भी नष्ट नहीं हो सकते।

आप अपने भाग्य के स्वयं निर्माता हैं। आप अपने भाग्य के स्वामी हैं। आप उसे बना सकते हैं तथा बिगाड़ सकते हैं। आप कर्म का बीज बोते हैं और उससे प्रवृत्ति प्राप्त करते हैं। आप प्रवृत्ति बोते हैं और आदत पाते हैं। आप आदत बोते हैं और उससे चरित्र पाते हैं। आप चरित्र बोते हैं तथा भाग्य पाते हैं। अत: भाग्य आपकी अपनी सृष्टि है। यदि आप चाहें, तो भाग्य को मिटा सकते हैं; क्योंकि वह स्वभावों का गट्ठर है।

आत्म-प्रयत्न को पुरुषार्थ कहते हैं। पुरुषार्थ के द्वारा आप सब-कुछ प्राप्त कर सकते हैं। अपने स्वभाव को परिवर्तित कर दें। अपनी विचार-पद्धति को परिवर्तित कर डालें। आप अपने भाग्य पर विजय प्राप्त कर लेंगे। आप यदि इस समय यह विचार रखते हैं कि 'मैं शरीर हूँ', तो आध्यात्मिक विचारधारा आरम्भ कर दें और सोचें कि 'मैं अमर, निरोग, अलिंग आत्मा हूँ।' आप मृत्यु पर विजय पा कर परम ज्योतिर्मय अमर धाम को प्राप्त कर लेंगे।

सत्कर्म तथा सद्विचार के द्वारा आप अपने भाग्य को निरस्त्र बना सकते हैं। आपमें कर्म करने का इच्छा-स्वातन्त्र्य है। पुरुषार्थ के द्वारा रत्नाकर वाल्मीकि हो गये। पुरुषार्थ के द्वारा मार्कण्डेय ने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली। पुरुषार्थ के द्वारा ही उद्दालक ने निर्विकल्प- समाधि पायी। पुरुषार्थ के द्वारा सावित्री ने अपने पति सत्यवान् को पुनर्जीवन प्रदान किया।

अतः, हे प्रेम! आत्म-विचार तथा ध्यान में दृढ़ता से संलग्न रहिए। सावधान रहिए तथा प्रयत्न कीजिए। विचारों तथा कामनाओं का दमन कीजिए। आज के पुरुषार्थ के द्वारा कल के दुर्भाग्य को जीत लीजिए। शुभ कामनाओं के द्वारा अशुभ कामनाओं को विनष्ट कीजिए। अशुभ विचारों को शुभ विचारों के द्वारा नष्ट कर अपने भाग्य पर विजय पाइए।

भाग्यवादी न बनिए। अशक्त न बनिए। सिंह के समान कटिबद्ध हो जाइए। प्रयत्न कीजिए तथा आत्म-स्वराज्य प्राप्त कीजिए। आपमें शक्ति का अतुल्य भण्डार है। आपके अन्दर ज्ञान का विशाल सागर है। आपमें सारी क्षमताएँ सुप्तावस्था में हैं। उनको उद्घाटित करके जीवन्मुक्त बन जाइए।

आप सब इसी जन्म में आत्म-साक्षात्कार तथा ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आप सब आनन्द-सागर में निमग्न हो कर प्रबुद्ध बनें! आप सब जीवन्मुक्त की भाँति विभासित हो उठें! **(अनूदित)**

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय द्वारा एक विनम्र प्रयास के रूप में 'शिवानन्द होम' का प्रारम्भ ऐसे लोगों की सेवा के लिए किया गया है जो निर्धन और जरूरतमन्द हैं, जिन्हें डाक्टरी सहायता की आवश्यकता है किन्तु उसके लिए साधन नहीं है। जिनकी सहायता के लिए न तो कोई व्यक्ति है, न ही शिर छिपाने का स्थान है; जो छूत के रोगों से ग्रस्त हैं और जिनकी देख-भाल करने वाला कोई नहीं है।

इस बार निकटवर्ती कुष्ठी-बस्तियों से कुष्ठ रोग के अतिरिक्त अन्य विभिन्न रोगों से ग्रस्त लोग भरती किये गयेह्ल वृद्धावस्था से सम्बन्धित रोग, निर्जलन (डीहाइड्रेशन), मधुमेह या शक्कर रोग, रक्ताल्पता (अनीमिया), श्वास रोग (दमा), गिरने के कारण चोट इत्यादि। एक बुजुर्ग बाबा जी को रक्त दिया गया तथा दो अन्य व्यक्तियों को गम्भीर स्थिति में अस्पताल में भरती कराया गया। उनमें से एक की आँतों में गम्भीर रूप से छेद हो चुके थे, अतः उसकी अभी भी अस्पताल में चिकित्सा चल रही है। दूसरा आन्त्र-ज्वर व यकृतशोथ से ग्रसित था और वह तीन दिन तक मूर्छित रहा। गुरुदेव की कृपा और उनकी सर्वव्यापक उपस्थिति से यह कुष्ठ रोगी बहुत शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ करके एक सप्ताह में ही अस्पताल से छुट्टी पा गया।

''स्वामी चिदानन्द जी ने हरिद्वार की सड़क पर एक कुष्ठ रोगी पड़ा हुआ देखा। वह उसे वहाँ से अपने कन्धों पर उठा कर आश्रम तक ले आये। आश्रम के अधिकांश लोग छूत की बीमारी होने से भयभीत थे, अतः स्वामी जी ने उसके लिए एक पहाड़ी पर टीन की छत के नीचे रहने का स्थान बना दिया। रोगी के घाव नंगे और खुले थे और उसकी टाँगों और बाँहों में से मांस के लोथड़े गिर रहे थे। स्वामी जी बिलकुल जैसे एक माँ अपने शिशु को खिलाती है, ऐसे दिन में आठ या दस बार अपने हाथों से शिशुवत् उसे खिलाते थे। स्वामी जी महाराज के हृदय में कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों के लिए विशेष स्थान है। आश्रम में कोई भी विशेष पर्व का दिन हो, स्वामी जी कुष्ठ रोगियों को देख कर आना कभी नहीं भूलते। उस दिन स्वामी जी कुछ-न-कुछ विशिष्ट प्रसाद बाँटते हैं और वे सब इस तरह भागे चले आते हैं जैसे बच्चे अपने प्यारे पिता की ओर।'' ('भारतवासी यह संन्यासी' से)

इस बार कुछ अन्य रोगी भी भरती किये गये। यह वर्षा से शिर से पाँव तक पूरी तरह भीगे हुए निराश्रित लोग थे, जो इतने निर्बल हो चुके थे कि भोजन और छत के लिए खोज भरी आँखों से देखते तो थे पर कहीं जा पाने में असमर्थ थे। आश्रम मुख्यालय से भी दो रोगी लाये गये। एक की तो टाँगों में घाव थे जो बिगड़ चुके थे और उनमें कीड़े चल रहे थे। किन्तु अब धीरे-धीरे उसकी स्थिति में सुधार हो रहा है। और एक बाबा जी हैं जिनको दाहिनी ओर का लकवा है, इसलिए बहुत ही कठिनाई से चल और बोल पाते हैं; इन्हें अभी कुछ ही घण्टे पहले भरती किया गया है। नये भरती किये गये रोगियों के अतिरिक्त अन्य रोगी भी इलाज पूरा हो जाने पर भेज दिये जा सकते हैं। ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

''भूखों को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

पावन-स्मृति में

एक महान् देदीप्यमान सितारे का पावन आख्यान
परम आराधनीय परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

वह महान् देदीप्यमान, उज्ज्वल सितारा, जो सम्पूर्ण विश्व-भर में लाखों-करोड़ों लोगों द्वारा श्रद्धा-भक्ति सहित पूजा जाता था, आज सशरीर हमारे बीच नहीं रहा, किन्तु हम सबके हृदय-मन्दिरों में उन्होंने सदा के लिए एक वन्दनीय स्थान बना लिया है।

हम अत्यन्त दुःखी हृदय से अपने हर-मन-प्यारे परमाध्यक्ष परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की गुरुवार, २८ अगस्त को रात्रि के ८ बज कर ११ मिनट पर महासमाधि होने का दुःखद समाचार दे रहे हैं। हम उन्हें, जिनका हमारे पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की दृष्टि में भी अत्यन्त ऊँचा स्थान था, को अत्यन्त विनम्रता और आदर-पूर्वक अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज पिछले ३-४ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे; किन्तु जीवन के अन्तिम समय तक दिव्य जीवन संघ के आध्यात्मिक गुरु और परमाध्यक्ष के रूप में किस प्रकार समस्त कार्यभार सतर्कतापूर्वक देखते रहे, यह सभी के लिए अत्यन्त आश्चर्यजनक था। स्वामी जी महाराज अभी, २४ सितम्बर को अपना ९२ वाँ वर्ष पूर्ण करने वाले थे। अचानक २६ अगस्त को परिस्थितियों ने एक गम्भीर मोड़ लिया और वे अचेतनावस्था (मूर्छा) में चले गये। डाक्टर उनकी स्थिति की निरन्तर जाँच कर रहे थे, अतः जब इसमें सुधार होता दिखायी न दिया तो अगले ही दिन, उनके निवास-स्थान में ही आई. सी. यू. की समस्त सुविधाएँ उपलब्ध कर दी गयीं। किन्तु जो अवश्यम्भावी था वह अगले दिन हो कर ही रहा। अतः जैसी कि उनकी तीव्र इच्छा थी कि उनके शरीर को गंगा मैया के पावन जल में सूर्योदय से पूर्व ही प्रवाहित कर देना चाहिए, उसका दृढ़तापूर्वक अक्षरशः पालन करते हुए २९ अगस्त के प्रातः ३-३० बजे ही इस महान् यात्रा की तैयारी आरम्भ हो गयी। स्वामी जी के शरीर को अनेक प्रकार के पुष्पों से सुसज्जित कुर्सी पर बैठा कर गुरुदेव के समाधि मन्दिर से आश्रम के श्री विश्वनाथ मन्दिर के आगे से भजन हॉल और श्री विश्वनाथ मन्दिर की परिक्रमा करते हुए गुरुदेव कुटीर के सामने से होते हुए हमारे पाठकों के लिए पूज्य स्वामी जी महाराज के व्यक्तित्व का विस्तार से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि उनके जीवनचरित के सम्बन्ध में बहुत-कुछ छप चुका है, इसके अतिरिक्त उनके साथ दीर्घ काल तक घनिष्ठ सम्बन्ध रह चुका है, उनके दर्शनों का, उनके श्रीमुख से प्रेरणाप्रद प्रवचन और कीर्तन श्रवण करने का सौभाग्य भी बहुत लम्बे समय तक प्राप्त हो चुका है।

पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का जन्म २४ सितम्बर १९१६ में हुआ। वे अपने माता-पिता की पाँच सन्तानों में द्वितीय थे। उन्हें श्रीधर राव नाम दिया गया। उनके पिता श्रीनिवास राव अनेक गाँवों और जमीन के मालिक एक बड़े जागीरदार थे और उनकी माँ सरोजिनी देवी अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति की विदुषी महिला थीं। एक सम्पन्न, अनुशासित और आध्यात्मिक प्रेरणाप्रद वातावरण में पालन-पोषण होने के कारण किशोर श्रीधर राव में बिना प्रयास किये ही उनके मन और बुद्धि में समस्त दिव्य गुण स्वाभाविक रूप से ही आ गये थे। सन् १९३८ में वे एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी के रूप में मद्रास के सुप्रसिद्ध लोयोला क्रिश्चियन कॉलेज से प्रतिष्ठा सहित स्नातक हुए। इस प्रकार बड़ी सुगमता से उन्होंने ईसाई आदर्शों और सन्तों का ज्ञान प्राप्त कर लिया जिसके परिणाम स्वरूप वे अत्यन्त सहजता से हिन्दू और ईसाई धर्म के बीच की समानताओं को जान गये।

सत्य की खोज का अपने हृदय में तीव्र उत्साह लिये हुए वह एक दिन चुपचाप घर से निकल पड़े और दक्षिण भारत में तिरुपति के निकट किसी आश्रम में जा पहुँचे, किन्तु परिवार वालों को पता चल गया और उन्हें वापस लौटा लाये। किन्तु घर में रहते हुए भी युवक श्रीधर ने अपने लक्ष्य को आँखों से ओझल नहीं होने दिया और अपनी साधना में लगे रहे।

कर्नाटक के दक्षिणी प्रान्त के एक नगर मैंगलोर के एक उच्च वर्गीय समाज के सम्भ्रान्त, सम्पन्न और कुलीन परिवार से होने के कारण शुरू से ही उनके स्वभाव में से उदात्तता, उदारता, दयालुता इत्यादि उत्कृष्ट गुण तथा अन्य वह सभी सद्गुण जो किसी व्यक्ति को महिमामण्डित करने वाले हैं, उनमें सहज रूप में ही स्पष्टतया दृष्टिगोचर होते थे। अतः यह कहना कि वह एक निष्ठावान् व्यक्ति थे, एक बहुत ही सामान्य सी बात लगती है!

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज १९४३ में शिवानन्द आश्रम में पहुँचे, तब वह श्रीधर राव थे। स्वभाव से ही स्नेहशील होने और संस्था के प्रति प्रेम और समर्पण भाव होने के कारण वह बहुत शीघ्र ही आश्रम में सबके प्रिय बन गये। पूज्य गुरुदेव ने भी उनके भीतर निहित सन्त-स्वभाव को बहुत शीघ्र पहचान लिया। १९४९ में गुरुदेव ने उन्हें सन्त-परम्परा में दीक्षित करके संस्था का महासचिव बना दिया जिसे उन्होंने पूर्ण अवधि पर्यन्त अत्यन्त विश्वसनीयता से निभाया।

पूज्य स्वामी जी महाराज रोगियों की अत्यन्त सावधानी और प्रेमपूर्वक देखभाल करने तथा कुष्ठरोगियों और आहत या बीमार जीव-जन्तु और पक्षियों तक की ओर विशेष रूप से ध्यान देने के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने अत्यन्त प्रतिभाशाली प्रवचन दिये, मर्मस्पर्शी लेख लिखे तथा एक अत्यधिक शिक्षाप्रद योग-संग्रहालय का निर्माण किया। इन सबने स्वाभाविक ही गुरुदेव से प्रशंसा प्राप्त की और परिणाम स्वरूप गुरुदेव ने उन्हें विश्व-भर में अपना आध्यात्मिक प्रतिनिधि बना कर भेजा।

स्वामी जी महाराज गुरुदेव तथा उनके अन्य शिष्यों सहित १९५० में २ महीने की अखिल भारत तथा लंका की युगान्तरकारी यात्रा पर गये। आश्रम में प्रवेश होने के आरम्भ से ही वह गुरुदेव के सर्वाधिक प्रिय और चयनित शिष्य रहे। आश्रम में कोई भी उच्चाधिकारी अथवा महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठित व्यक्ति या सन्त-महात्मा आते, तो वह उनसे तत्परता से वार्तालाप करने के लिए वहाँ उपस्थित होते, उन्हें गुरुदेव की अध्यक्षता में चल रही आश्रम की समस्त गतिविधियों से अवगत कराते, उन्हें प्रभावित करते हुए आश्रम के उद्देश्यों और नियमों का वर्णन करते। गुरुदेव को महिमान्वित करने का कोई भी अवसर वह अपने हाथ से जाने न देते। इस प्रकार उन्हें गुरुदेव के अनन्त आशीर्वाद प्राप्त थे।

१९५६ में उनके जीवन में उस समय एक कठिन निर्णयकारी क्षण सामने आ खड़ा हुआ, जब एक दिन गुरुदेव ने उन्हें बुलाया और अपना हृदय उनके सामने खोल कर रखते हुए बताया कि वह स्वामी जी को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते हैं। स्वामी जी महाराज ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक इसका स्पष्ट उत्तर न दे कर यह कहा कि उनकी इच्छा पूर्णतया आध्यात्मिक साधना में लगने की है, जो कि महासचिव के अत्यन्त भारी उत्तरदायित्व को निभाते हुए कर पाने में वह असमर्थ हैं। किन्तु गुरुदेव अपने मन में जानते थे कि पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ही उनके समुचित और सुयोग्य उत्तराधिकारी थे। १९६२ में ऐसा ही अवसर एक बार फिर आया जब गुरुदेव ने पुनः ऐसा ही विचार प्रकट किया जिसे कि उन्हीं कारणों से पूर्ण नहीं किया गया। अब तक यह बात पूर्णतया निश्चित हो चुकी थी कि चयनित उत्तराधिकारी निस्सन्देह रूप से यही हैं। अतः गुरुदेव की यह तीव्र इच्छा कहें, भविष्यवाणी कहें या सत्संकल्प कहें, गुरुदेव की महासमाधि के उपरान्त तब पूर्ण हुई जब अन्य सब बातों के ऊपर वरीयता पा कर अगस्त १९६३ में पूज्य स्वामी जी महाराज विश्वव्यापी संस्था दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष बना दिये गये।

पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी, महासचिव के रूप में पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की सकुशल सहायता से संस्था की बागडोर अत्यन्त दक्षतापूर्वक सँभाले रहे और इसे धीरे-धीरे उत्तरोत्तर उन्नति के शिखरों तक ले गये; अन्ततः गुरुदेव के मिशन को एक शक्तिशाली विश्वव्यापी संस्था, एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का रूप दे दिया, जिसे आप आज देख ही रहे हैं। निस्सन्देह आदर्श गुरु के एक आदर्श शिष्य!

पूज्य स्वामी जी महाराज ने विश्व के प्रत्येक कोने में अनेकों बार भ्रमण किया। जब-जब भी और जहाँ भी उन्हें अवसर मिला, गुरुदेव की जीवन-परिवर्तनकारी शिक्षाओं और उपदेशों को प्रभावशाली ढंग से प्रचार-प्रसार करने में कोई कमी नहीं रहने दी, प्रत्युत उन्होंने गुरुदेव के और उनकी संस्था के लक्ष्य की पूर्ति के प्रति अपने कर्तव्य को अत्यन्त उत्साहपूर्वक निभाते हुए, गुरुदेव के नाम-यज्ञ के प्रकाश को ले कर, असंख्य सुअवसरों को स्वयं बनाते हुए व्यापक रूप से भ्रमण किया।

सहस्रों की संख्या में लोगों को पूज्य स्वामी जी महाराज का सामीप्य प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। उनकी व्यक्तिगत सेवा करने, उनके लिए पत्र-व्यवहार करने, आश्रम के प्रबन्ध से सम्बन्धित कार्यों में सहायता करने अथवा अन्य किसी भी प्रकार के कार्यों (जिनका यहाँ स्थानाभाव के कारण विषद रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता) में अपनी सेवाएँ समर्पित करने का अवसर असंख्य लोगों को मिला है। किन्तु एक बात जिसे किसी भी प्रकार, किसी के द्वारा भी भुलाया नहीं जा सकता, वह है हमारे सम्माननीय महासचिव श्रद्धेय श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज की १९५३, जब से वह आश्रम में आये हैंह्नह्न५५ वर्ष की विशेष, अथक और अबाध सेवाएँ!

भक्तों की ओर से, आध्यात्मिक विभूतियों की ओर से, विभिन्न आश्रमों के महामण्डलेश्वरों की ओर से तथा विश्व के बहुत से भागों के सुप्रसिद्ध महान् व्यक्तियों की ओर से अनेकों श्रद्धांजलियाँ निरन्तर आ रही हैं। बहुत से प्रसिद्ध समाचार-पत्र तथा दूरदर्शन चैनलों द्वारा पूज्य स्वामी जी महाराज के सम्बन्ध में बताया जा रहा है।

संन्यास-परम्परानुसार १२ सितम्बर को स्वामी जी महाराज की महासमाधि का षोडशी समारोह सम्पन्न होगा।

हरि ॐ तत्सत्!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

आश्रम मुख्यालय में साधना-सप्ताह का वार्षिकोत्सव

परम पावन गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के आजीवन कार्यों में एक जो विलक्षण कार्य रहा, वह था साधकों को सत्य की ओर, ईश्वर-साक्षात्कार की ओर प्रेरित करना, जागरूक करना और निर्देशित करना। इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए आश्रम मुख्यालय के द्वारा १९ जुलाई से २५ जुलाई २००८ तक ४५ वाँ साधना-सप्ताह आयोजित किया गया। समस्त कार्यक्रम शिवानन्द सत्संग भवन में सम्पन्न हुआ। इन सम्पूर्ण सातों दिन कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रातःकालीन ब्राह्ममुहूर्त के प्रार्थना-ध्यान सत्र तथा उसके उपरान्त प्रभातफेरी के साथ हुआ, जिसका संचालन श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी ने किया। श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने योगासन सत्रों का संचालन किया। आश्रम के वरिष्ठ सन्तों तथा अन्य संस्थाओं से विशेष रूप से आमन्त्रित दिव्य विभूतियों ने कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाते हुए अपने प्रेरणास्पद, विद्वत्तापूर्ण आशीर्वचन की वृष्टि की।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज (कैलास आश्रम, ऋषिकेश) ने अपने उद्घाटन प्रवचन में कहा कि केवल मात्र एक ब्रह्म ही सत्य है, और हम उस ब्रह्म से भिन्न नहीं हैं। यद्यपि हम सत्-चित्-आनन्द स्वरूप हैं, तथापि अज्ञानवश स्वयं को बद्ध समझ रहे हैं। श्रवण, मनन और निदिध्यासन के अभ्यास से ज्ञान की प्राप्ति होती है। अपने-अपने वर्णाश्रम-धर्म के अनुसार कर्तव्यों का पालन करते हुए, जप, पूजा, कीर्तन तथा निःस्वार्थ सेवा इत्यादि साधनाओं में लगे रहने से व्यक्ति चारों पुरुषार्थ अर्थात् विवेक, वैराग्य, षड्सम्पत और मुमुक्षुत्व को प्राप्त कर सकता है और इस प्रकार श्रवण का सुयोग्य अधिकारी बन सकता है। अपने प्रवचन के अन्त में स्वामी जी महाराज ने अपने साधना-काल के प्रारम्भिक दिनों का स्मरण करके श्रोताओं के हृदयों को झंकृत करते हुए बताया कि वह भी परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के

'सर्वं विष्णुमयं जगत्'

संसार के समस्त नाम-रूपों में ईश्वर निवास करते हैं। 'वह' सर्वव्यापी हैं। इस तथ्य को स्वीकार कर लेने तथा इसका अनुभव करने से सेवा पूजा में रूपान्तरित हो जाती है; क्योंकि तब आप मानव में ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने लगते हैं। आपके हृदय में एक नवीन भाव उदित हो जाता है। आप एक ऐसे दृश्य के द्रष्टा बन जाते हैं, जिसकी वस्तुएँ जो कुछ देर पहले लौकिक थीं, अब सचमुच अलौकिक हो गयी होती हैं। इस आध्यात्मिक पुट से सेवा पवित्र बन जाती है और इस प्रकार आपका जीवन परम तत्त्व की वैश्व अभिव्यक्ति की सतत उपासना-प्रक्रिया में रूपान्तरित हो जाता है। पूज्य गुरुदेव ने भक्तों तथा साधकों से 'सर्वं विष्णुमयं जगत्' सूत्र को सदा स्मरण रखने तथा उसे अनुभव करने को कहा था।

स्वामी चिदानन्द

शिष्य हैं। उन्होंने परम श्रद्धेय गुरुदेव को अपने श्रद्धा-सुमन समर्पित किये।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी श्यामसुन्दर शास्त्री जी महाराज (गरीबदास आश्रम, हरिद्वार) ने अपने प्रवचन में साधकों को अपनी साधना करने के लिए बहुत से उपयोगी निर्देश दिये। आध्यात्मिक जीवन में शीघ्रतम उन्नति के लिए उन्होंने गुरु-कृपा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, साधकों को अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने को कहा। साधक को परमात्मा की सर्वव्यापकता को दृढ़तापूर्वक समझते हुए परमात्मा की सृष्टि से प्रेम करने, सरल, सहज तथा सन्तुष्ट रहने तथा सबके लिए नदियों और वृक्षों की भाँति परोपकारी बनने के लिए कहा।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी असंगानन्द जी महाराज (परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश) ने भगवन्नाम में विश्वास रखने तथा साधना के महत्त्व को समझने पर बल देते हुए कहा कि यह केवल मनुष्य-जन्म में ही सम्भव है कि मानव आत्म-अनात्म के भेद को जान सके। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को वासनाओं का शिकार नहीं बनना चाहिए तथा मानव-देह, जो कि पानी का बुदबुदा मात्र है, की नश्वरता को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। संसार-रूपी इस रंगमंच पर साधक को राजा जनक से प्रेरणा ले कर कार्यरत रहना चाहिए। राजा जनक ने राज्य के समस्त कार्य करते हुए ही पूर्णता को प्राप्त किया था।

परम पूज्य श्री दण्डी स्वामी हंसानन्द जी महाराज (स्वर्गाश्रम) ने कहा कि अन्ततोगत्वा प्रत्येक व्यक्ति की परम खोज मोक्ष-प्राप्ति, परिपूर्ण ज्ञान और परमानन्द की प्राप्ति ही है। वेदों की उद्घोषणा है कि हम सच्चिदानन्द ब्रह्म से भिन्न नहीं हैं। यह हमारा अज्ञान ही है जो हमें इस सत्य की अनुभूति करने में बाधक है। अज्ञान तीन रूपों, यथाह्न्ह्नमल, विक्षेप और आवरणह्न्ह्नके द्वारा सत्य को जानने में बाधा डालता है। यह बिलकुल इसी प्रकार से कार्य करता है जैसे बादल हमारी दृष्टि और सूर्य के मध्य में आ कर सूर्य को देख सकने में बाधक बन जाते हैं। वेदान्त की उद्घोषणा हैह्न्ह्नकर्माणि चित्तशुद्ध्यर्थम् एकाग्र्यार्थमुपासनम्। मोक्षार्थं ब्रह्मविज्ञानं सर्ववेदान्त निर्णयः॥ निःस्वार्थ सेवा (फल-प्राप्ति की इच्छा न रखते हुए तथा प्रभु को समर्पित करते हुए कर्म करना) करने से चित्त-शुद्धि होती है; भगवद्-भक्ति तथा सन्तों के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखने से मन अपने चंचल स्वभाव को छोड़ कर एकाग्र हो जाता है; साधन-चतुष्टय से सम्पन्न होने तथा अवान्तर वाक्य (सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म) और 'तत्त्वमसि' इत्यादि महावाक्यों का गुरुमुख से श्रवण करके उनके निहितार्थों पर निदिध्यासन करने से व्यक्ति अपने निज-स्वरूप, अर्थात् सत्-चित्-आनन्द स्वरूप को जान लेता है। तत्पश्चात् इन्द्रियगोचर यह समस्त जगत्-प्रपंच और इसके विषय-पदार्थ ब्रह्म से भिन्न नहीं हैं, इन सबका आधार ब्रह्म ही है, इसका बोध हो जाता है।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी आनन्द चैतन्य सरस्वती जी महाराज (आनन्द कृष्णधाम, हरिद्वार) ने अत्यन्त बोधगम्य ढंग से साधना, भावना और कामना के मध्य के परस्पर आन्तरिक सम्बन्ध को समझाया। हमारी भावना यदि साधना उन्मुखी है तो वह हमें दिव्यता की ओर ले जाती है और यदि यह कामना उन्मुखी है तो बन्धन का कारण बन जाती है। साधना आनन्द की अनुभूति कराने वाली और कामना हमें बन्धन में डालने वाली है। उन्होंने आध्यात्मिक जीवन में गुरु की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गुरु किस प्रकार चिन्तन, दृष्टि और स्पर्श के द्वारा शिष्य पर अपनी कृपा-वृष्टि करता है।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विश्वात्मानन्द पुरी जी महाराज (साधना-सदन, हरिद्वार) ने अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्य शाश्वत, परिशुद्ध और अनन्त सुख की

खोज में सदा से लगा हुआ है और यह उसे केवल परमात्मा से ही प्राप्त हो सकता है। साधना के द्वारा साधक अपने उस वास्तविक सच्चिदानन्द स्वरूप को जान सकता है जिसे वह अज्ञान के कारण, देहाध्यास के कारण अनुभव नहीं कर पाता है। साधक जब निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य कर्मों को करता हुआ, प्रभु के प्रति सुदृढ़ भक्ति-भाव रख कर, शुद्ध हृदय और तीव्र विवेक-वैराग्य से सम्पन्न बुद्धि ले कर गुरु के समीप जाता है तथा उपनिषदों के महावाक्यों का श्रवण करके उनके गहन अर्थों को समझ कर उन पर मनन और निदिध्यासन करता है, तब उसे सूक्ष्मातिसूक्ष्म ब्रह्म की अनुभूति होती है।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज (उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय) ने साधना-सप्ताह के सातों दिन प्रातःकालीन ब्राह्ममुहूर्त के सत्र में तथा अन्य सत्रों के अपने प्रवचनों में साधना के विविध पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि इस संसार में तीन वस्तुएँ दुर्लभ हैं अर्थात् अत्यन्त कठिनता से प्राप्त होती हैंह्नह्नमनुष्य-जन्म, मुमुक्षुत्व और सन्त महापुरुष का संश्रय। जीवन में परमावश्यक प्राप्तव्य वस्तु ईश्वर-साक्षात्कार है, क्योंकि इससे समस्त सांसारिक क्लेशों की निवृत्ति हो जाती है तथा विशुद्ध शाश्वत सुख की प्राप्ति हो जाती है। और इसके लिए व्यक्ति को साधना में प्रवृत्त होना आवश्यक है, क्योंकि यही मनुष्य-जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है। साधक को विवेक, वैराग्य और तीव्र मुमुक्षुत्व की भावना सहित अपने जीवन के इस परम लक्ष्य की ओर सतत बढ़ते जाना चाहिए।

आध्यात्मिक जीवन में मन को समुचित रूप से सुसंस्कृत करने का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वेच्छापूर्वक निःस्वार्थ सेवा के द्वारा, भक्ति के द्वारा और आत्म-अनात्म सम्बन्धी सही ज्ञान के द्वारा व्यक्ति को मल, विक्षेप और आवरणह्नह्नतीनों दोषों से स्वयं को मुक्त कर लेना चाहिए। योग को यद्यपि कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और ध्यानयोग में बाँटा गया है, तथापि ये सब परस्पर एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, प्रत्युत पूरक हैं। श्री स्वामी जी महाराज ने सभी योगों के सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन किया और कहा कि साधना में शीघ्र उन्नति और विकास के लिए गुरुदेव ने समस्त योगों को मिला कर समन्वययोग हमें प्रदान किया है। आध्यात्मिक जीवन में सबसे अधिक आवश्यक है आत्म-कृपा, क्योंकि इसके बिना व्यक्ति गम्भीरता से साधना में नहीं लग सकता और इस प्रकार अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकता।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा मन जब सांसारिक विषय-पदार्थों में आसक्त रहता है, तो हमारे बन्धन का कारण बनता है और यही मन जब ऐसी आसक्तियों से स्वयं को अलग कर लेता है, तो हमारे मोक्ष का साधन बन जाता है। समस्त साधनाओं का उद्देश्य मन को नियन्त्रित करना है, जो कि वैराग्य और अभ्यास अर्थात् साधना करने से होता है। साधना में सफलता प्राप्त करने का यही मार्ग है। उन्होंने सद्गुणों का विकास करने की आवश्यकता की ओर भी ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि साधना में विकास और परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह अनिवार्य है। इन सद्गुणों में से गुरुदेव ने सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य पर अत्यधिक बल देते हुए इन्हें योग-साधना का मूलाधार अर्थात् नींव कहा है। स्वामी जी ने साधक के साधना-पथ में आने वाली बाधाओं पर प्रकाश डालते हुए, उन पर विजय पाने के उपायों का भी वर्णन किया तथा सफलता प्राप्त करने के लिए साधना में श्रद्धा और प्रेमपूर्वक सतत लगे रहने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही यह भी कहा कि व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में और साधन-पथ में भी अति न करके

स्वर्णिम मध्यम-मार्ग का ही अनुसरण करना चाहिए अर्थात् सहजतापूर्वक सतत प्रयत्नशील रहें।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज (उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय) ने अपने प्रवचन में कहा कि जैसे सुख की हम सब आकांक्षा करते हैं, उसकी उपलब्धि साधना के बिना सम्भव नहीं है। साधक के लिए बहुत अधिक सुशिक्षित होना कोई आवश्यक नहीं है। परमाराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी के शब्दानुसार भगवान् में पूर्ण दृढ़ विश्वास होना चाहिए। गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने अपने 'बीस आध्यात्मिक नियमों' में साधना के सम्बन्ध में बताया है। महर्षि पतंजलि ने मन की पवित्रता पर विशेष बल दिया है जो कि यम और नियमों का पालन करने से सम्भव है।

भगवद्गीता के अनुसार आध्यात्मिक जीवन में बुद्धि का विशेष स्थान बताया गया है। केवल मानव को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि वह साधना कर सकता है। शरीर को नियन्त्रित करने, साधने और स्वस्थ रखने में आसन और प्राणायाम अत्यन्त सहायक हैं। प्राणायाम-साधना द्वारा मन का नियन्त्रण तथा ध्यान द्वारा बुद्धि का नियन्त्रण किया जा सकता है। भगवद्-साक्षात्कार के लिए हमें साधना को अपने जीवन का एक आवश्यक हिस्सा बना लेना चाहिए।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज (महासचिव, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय) ने अपने प्रवचन में अतीत की स्मृतियों का अवलोकन करते हुए बताया कि उन्हें परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन चरणों में सतत दश वर्ष बैठने का तथा श्रद्धेय गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के पावन सान्निध्य में चालीस वर्ष तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन दोनों को उन्होंने अत्यन्त समीप से ध्यानपूर्वक देखा और यह पाया कि उनके जीवन ही दिव्य जीवन के लिए एक सन्देश हैं। स्वामी जी महाराज के प्रवचन में बहुत से उपयोगी आदर्श गुँथे हुए थे जिनका हमें अनुसरण करना चाहिए। हमारा कोई भी कार्य किसी को किसी भी रूप में हानि पहुँचाने वाला नहीं होना चाहिए। हमें प्रत्येक प्राणी में भगवान् को देखना चाहिए। अपने जीवन में भला बनने और भलाई करने से तथा निरन्तर भगवद्-नाम तथा मृत्यु का स्मरण करने से हम किसी के साथ बुराई करने से बचे रहेंगे। जीवन में पवित्रता लाने से, नित्य धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय करने से तथा प्रभु-नाम का जप करने से भगवद्-साक्षात्कार अथवा ईश्वरानुभूति प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा।

श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने कहा कि मानव-जन्म होने का परम उद्देश्य ईश्वर-साक्षात्कार करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के बहुत से मार्ग हैं। इनमें से भक्ति-मार्ग सबसे सुगम है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि उनकी निर्गुण रूप में उपासना अति कठिन है, विशेष रूप से देहासक्त मनुष्यों के लिए और भी अधिक कठिन है। इसकी तुलना में सगुण-साकारोपासना सरल है।

श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने अत्यन्त बोधगम्य ढंग से 'गुरु' शब्द के गुह्यार्थ के सम्बन्ध में बताया कि यह शब्द 'अन्धकार को दूर करने वाला' अर्थ को लिये हुए है (गुकारो अन्धकारश्च रुकारोतत् निरोधकः)। परमाराध्य गुरुमहाराज का सन्देश पढ़ कर सुनाते हुए उन्होंने कहा कि पूर्णिमा के अतिरिक्त अन्य दिनों में जैसे अन्य खगोलीय बाधाओं के मध्य में आ जाने के कारण चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश को पूर्णतया ग्रहण नहीं कर पाता; ठीक इसी प्रकार सांसारिक इच्छाओं रूपी बाधाओं के मन में होने के कारण शिष्य गुरु के महिमामयी प्रकाश को ग्रहण नहीं कर पाता।

श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज ने कहा कि यह जीवन एक यात्रा है, जिसे हमें सफलतापूर्वक पूर्ण करना है। हमारी भली और बुरी प्रवृत्तियों में निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। मनुष्य-जीवन के चार पुरुषार्थों के सम्बन्ध में वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि अर्थ और काम को धर्म पर आधारित होना चाहिए तथा यह मोक्षोन्मुखी होना चाहिए।

श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में ध्यान की सरल और उपयोगी विधि बतायी। अपने गुरु-मन्त्र में पूर्ण निष्ठा और दृढ़ता से लगे रहने से साधक सुगमता से अपने मन को स्थिर कर सकता है। भगवान् का हम सबके भीतर निरन्तर निवास है और सब-कुछ उन्हीं की इच्छा से हो रहा है, ऐसा दृढ़ विश्वास होने से किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं रहती।

श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने कहा कि ईश्वरानुभूति का अर्थ है ईश्वर की उपस्थिति को सचमुच अनुभव करके, स्वयं अपने में से उसे प्रकट करना। अतः हमारे जीवन का लक्ष्य है भगवान्, जो हम वास्तव में हैं, को अभिव्यक्त करना। सामान्यतया हम सोचते हैं कि ईश्वर-अनुभूति का अर्थ है कि हमने अपने भीतर कोई बहुत बड़ी दिव्य अनुभूति करनी है। प्रायः हम आध्यात्मिक लोगों को जैसा उन्हें करता देखते हैं, वैसा समझते हैं। अतः हमने जिस सत्य को अपने भीतर पाया है, उसे बाहर भी प्रकटित होना चाहिए। इसका तात्पर्य है कि हमें अपनी छोटी 'मैं' को थोड़ा-थोड़ा करके प्रतिदिन समाप्त करते जाना है, ताकि हमारा वास्तविक स्वरूप जो है वह हमारे इस छोटी 'मैं' में से मुक्त हो कर बाह्य जगत् में प्रकट हो कर दिखायी दे सके।

इस 'अहंबोध' को दूर करने के हमारे इस कार्य में सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य की साधना करने से बढ़ कर और कुछ अधिक सहायक नहीं हो सकता। क्योंकि यह केवल पृथ्वी पर ईश्वर की अभिव्यक्ति ही नहीं, प्रत्युत उस अहं पर भी हथौड़े की सीधी चोट है जो कि हमारे भीतर स्थूल या सूक्ष्म किसी भी रूप में जम कर बैठा हुआ है, यह अहं स्व-आसक्ति का साकार रूप है, यह कपटपूर्ण चिन्तन है तथा इन्द्रियों की कभी समाप्त न होने वाली भूख है। हमारे भीतर जो दिव्यता निहित है, उसे अभिव्यक्त करने का सर्वाधिक सहज और सरल मार्ग जीवन की उस पद्धति का अनुसरण करना है जो हमारे वैदिक वर्णाश्रम धर्म में बतायी गयी है, जिसका मूल आधार धर्म और मोक्ष है।

स्वामी जी ने अन्त में यह कह कर समाप्त किया कि इस प्रकार वैदिक जीवन-पद्धति को अपनाने से; स्वयं अपने आचरण-व्यवहार में भगवान् जैसा होने का जीवन लक्ष्य रखने से; तथा सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने से हम सहज रूप में शाश्वत धर्म का अनुपालन कर रहे हैं और यह आज के व्यस्त जीवन के अनुकूल भी है।

श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि मानव-जाति चार प्रकार की है यथाह्नह्नसत्पुरुष, सामान्य-पुरुष, मनुष्य-राक्षस और अधम-पुरुष। यदि हम अपने मन का विश्लेषण करें तो पायेंगे कि हममें से अधिकांश दूसरे और तीसरे वर्ग में आते हैं जहाँ स्वार्थपरता का प्राधान्य है। अपनी इस निम्न प्रकृति से छुटकारा पाने के लिए हमें यम और नियमों का कठोरता से अनुसरण करना चाहिए। साधना का प्रथम और सर्वोपरि पग है अपने अन्तःकरण में से स्वार्थपरता को निकालना, क्योंकि ऐसा करने से हमें आत्मानुभूति प्राप्त करने में बहुत सहायता मिलेगी।

श्री स्वामी राधाकृष्णानन्द जी महाराज ने वर्णन किया कि यह संसार किस प्रकार ब्रह्म के ऊपर अध्यारोपित है। इसके लिए उन्होंने रज्जु-सर्प भ्रान्ति का

पुण्य-कर्म वे हैं, जो ईश्वर-प्राप्ति में सहायक हैं तथा पाप-कर्म वे हैं, जो ईश्वर-प्राप्ति में बाधक हैं। **स्वामी चिदानन्द**

उदाहरण दिया। वेदान्त-अध्ययन और अभ्यास के साथ-साथ निःस्वार्थ सेवा, भक्ति और दान का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होना आवश्यक है, जैसे गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन में दिखायी देता है।

श्री स्वामी निराकारानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि हमारे समस्त दुःखों का मूल कारण हमारा 'मैं' और 'मेरा-पन' है। हमें महर्षि याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के जीवन से शिक्षा लेनी होगी। हमें लौकिक विषय-वस्तुओं की कामना कभी भी नहीं करनी चाहिए, प्रत्युत परमानन्द की प्राप्ति की आकांक्षा रखनी चाहिए।

श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज के प्रवचन में साधना-सम्बन्धी बहुत से उपयोगी विचार-बिन्दु थे। उन्होंने कहा कि साधक को इन्द्रिय-सुखों के पीछे नहीं भागना चाहिए। व्यक्ति को अपने उस मन को नियन्त्रित करने में अपनी शक्ति और सामर्थ्य लगा देनी चाहिए, जो उसे निम्न सुखों की ओर आकर्षित करता रहता है। उसे अपने जीवन में शुद्ध, विनम्र और सौम्य होना चाहिए जिससे कि वह जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति शीघ्र कर सके।

श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने साधकों को गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन और शिक्षाओं के सम्बन्ध में बताया। उन्होंने कहा कि गुरुदेव जाति-पाति, धर्म और रंग-भेद में विश्वास नहीं करते थे। वे सम्पूर्ण सृष्टि में भगवान् को ही देखते थे और उन्होंने निष्काम सेवा पर बहुत अधिक बल दिया, क्योंकि यह मन और हृदय को शुद्ध करती है। उन्होंने साधकों को अपना दैनिक व्यावहारिक कार्यक्रम बना कर उसके अनुसार दृढ़तापूर्वक चलने का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि सादा और सच्चा जीवन जिओ; अपनी आवश्यकताओं को कम करो; अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने की दृढ़ आकांक्षा करो और साधना में नियमितता का अनुपालन करो। सबमें सद्गुण खोजने का स्वभाव बनाना चाहिए; इससे शान्ति और प्रसन्नता की प्राप्ति तथा ध्यान-धारणा में सफलता की प्राप्ति होगी।

श्री स्वामी विवेकरूपानन्द जी महाराज ने साधना के सम्बन्ध में, जैसा देवीसूक्त और देवीमाहात्म्य में बताया गया है, उसके अनुसार वर्णन किया। मधु, कैटभ, महिषासुर, शुम्भ और निशुम्भ का देवी द्वारा वध किया जाना इस तथ्य को प्रकट करता है कि यदि हम माँ भगवती के शरणागत हो जाते हैं, अर्थात् भक्ति-भाव से स्वयं को उनके चरणों में समर्पित कर देते हैं, तो वह स्वयं ही हमारी काम, कर्म और अविद्या की गाँठों को काट देंगी और इस प्रकार हम मोक्ष प्राप्त कर लेंगे।

प्रो. राजेन्द्र कुमार भारद्वाज जी ने कहा कि दिव्य जीवन संघ के प्रतीक-चिह्न में आये मुख्य शब्दह्नह्नसेवा, भक्ति, ध्यान और साक्षात्कारह्नह्नगुरुदेव के समन्वययोग को प्रतिपादित करते हैं। इस समन्वययोग का अभ्यास अर्थात् इसकी साधना ईश्वर-प्राप्ति की ओर जाने वाला राज-मार्ग है। कर्मयोग पर विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि कर्मयोग की साधना का उद्देश्य दूसरों की सेवा करना ही होना चाहिए, यह किसी भी इच्छा को या स्वार्थ-भावना को ले कर नहीं किया जाना चाहिए।

प्रो. वासुदेव रणदेव जी ने अपने प्रवचन में श्रीमद्भगवद्गीता पर आधारित भक्तियोग पर बल दिया। उन्होंने साधकों को भगवान् श्री कृष्ण का गीता में दिया गया वह वचन स्मरण करवाया जहाँ वे कहते हैं कि जो अपना जीवन मुझे समर्पित हो कर जीते हैं, उन्हें मैं बुद्धियोग प्रदान करता हूँ। ऐसा प्रभु-केन्द्रित जीवन जीने से हम विवेक सम्पन्न हो जायेंगे और यह विवेकशीलता हमें अवास्तविक और वास्तविक के बीच के अन्तर को समझ पाने की क्षमता प्रदान करेगी।

श्री हरिहरसिंह जी ने अपने प्रवचन में रामचरित मानस में माता सुमित्रा के जीवन द्वारा अभिव्यक्त आदर्श का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि सुमित्रा की भक्ति और ज्ञान ने इस योग्य बनाया कि उन्होंने लक्ष्मण जैसे सुपुत्र को जन्म दिया। हमें अपनी साधना में उन्नति करने के लिए उन्हीं के जीवन आदर्शों को अपनाना चाहिए।

विभिन्न स्वामी जी तथा अन्य वक्ताओं के अतिरिक्त परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के तथा परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के विविध अवसरों पर ध्वन्यांकित व चित्रांकित (रेकार्ड) किये गये फिल्म भी स्क्रीन पर दिखाये गये। इसके अतिरिक्त प्रश्नोत्तर सत्र भी हुए, जिनमें साधकों के प्रश्नों और संशयों का निवारण परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने किया।

सप्तम दिवस के समापन सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने साधकों को विदाई सन्देश में शुभकामनाओं सहित विदाई उपदेश और आशीर्वचन दिये। ज्ञान-प्रसाद तथा प्रसाद-वितरण के साथ साधना-सप्ताह सम्पन्न हुआ।

मुख्यालय आश्रम में परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ४५ वाँ पुण्यतिथि आराधना-दिवस

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की ४५ वीं पावन पुण्यतिथि आराधना आश्रम मुख्यालय में २६ जुलाई २००८ को मनायी गयी। कार्यक्रम गुरुपूर्णिमा के दिन की भाँति ही रखा गया था। इसमें विशेषता यह रही कि पादुका-महापूजा के उपरान्त, वहींह्नह्नअर्थात् शिवानन्द सत्संग भवन में ही, जहाँ सम्पूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया था, पादुका की लक्षार्चना भी की गयी, जिसमें सभी भक्त सम्मिलित हुए।

इस दिन के वक्ता प्रातःकालीन सत्र में श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज, पूर्वाह्न सत्र में श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज और श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा अपराह्न सत्र में श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज और श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज थे, जिन्होंने परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उपदेशों पर और उनके अपने जीवन के द्वारा स्थापित आदर्शों पर प्रकाश डाला।

पूर्वाह्न सत्र में विश्व-शान्ति और सबके कल्याण-मंगल हेतु यज्ञ किया गया तथा सायंकाल में माँ गंगा की आरती की गयी।

रात्रिकालीन समापन सत्संग अर्ध रात्रि तक चलता रहा। इसमें आराधना-दिवस के लिए बाहर से विशेष रूप से आये हुए भक्तों ने भक्तिभावपूर्ण भजन-कीर्तन किया। उसके बाद गुरुदेव के जीवन पर आधारित फिल्म दिखायी गयी। आरती और विशेष प्रसाद-वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अम्बाला (हरियाणा): शाखा ने जुलाई २००८ की माहावधि में दैनिक सत्संग पूर्ण किये जिनमें प्रति रविवार को ३० मिनट महामृत्युंजय मन्त्र, प्रति सोमवार को १५ मिनट 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र, प्रति मंगलवार और शनिवार को श्री हनुमान जी के स्तोत्र-पाठ, प्रति बुधवार को 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्र का १५ मिनट जप, प्रति गुरुवार को गुरु-भजन तथा प्रति शुक्रवार को श्री देवी के स्तोत्र-पाठ आदि आधिक्य रूप से किये गये। शाखा ने आराधना-दिन को पादुका-पूजा और दिनांक २७ को एक विशेष सत्संग भी आयोजित किया। दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा सेवा का सातत्य रहा।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा के दैनिक कार्यक्रमों में प्रभातीय पूजा और उसके अनुकरण में गोपाल सहस्रनाम स्तोत्र-पाठ एवं सायंकालीन पूजा और उसके अनुसरण में श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पाठ; भजन-कीर्तन और श्रीमद् भागवतम् विषयक प्रवचन आदि के आधिक्य में शाखा ने प्रति गुरुवार को प्रभातीय पादुका-पूजन और सायंकाल में साप्ताहिक सत्संग परिचालित किये। शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा और चिदानन्द-दिन को अखण्ड कीर्तन किये गये।

बेंगुलूरु (कर्नाटक): नियमित गतिविधियाँहृह(१) प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, भक्ति-संगीत, कीर्तन तथा गुरुदेव के उपदेशों का स्वाध्याय। (२) प्रति शुक्रवार को श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के पारायण। (३) माह के प्रथम रविवार को एक सुप्रसिद्ध मठ में पूजा-अभिषेक, गुरुदेव के उपदेशों का स्वाध्याय, महामृत्युंजय मन्त्र का सामूहिक जप और ध्यान सहित मासिक सत्संग। (४) माह के अन्तिम रविवार को विशेष सत्संग और निर्धनों को अन्नदान।

गुरुपूर्णिमा-आराधना-दिन के विशेष कार्यक्रम निम्नानुसार थेहृहदिनांक १८ जुलाई को गुरुपूर्णिमा के महत्त्व विषयक आध्यात्मिक प्रवचन, दिनांक १९ को स्वामी रामदास के मनोबोध (मनाचे श्लोक) विषयक प्रवचन, दिनांक २० को भक्ति-संगीत, दिनांक २१ को गुरु-महिमा विषयक प्रवचन, दिनांक २२ को भगवान् सुब्रह्मण्यम् पर तिरुपुंज ईसई पर वझीपाह प्रभु के भक्तिपूर्ण भजन, दिनांक २३ को श्री ज्ञानेश्वर महाराज के भजन तथा दिनांक २४ को पादुका-पूजा के पश्चात् भक्ति-संगीत सम्पन्न हुए। दिनांक २६ को आराधना-दिन के विशेष कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, सत्संग, श्री बेलीमठ महासंस्थान के परम पूज्य महास्वामिगल द्वारा 'श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की महानता' विषयक प्रवचन, 'Mind', 'Guru-Geetha', 'Swami Sivananda', 'Swami Chidananda-Dayaswarupi' आदि पुस्तकों का विमोचन, मंगल-आरती, महाभोग प्रसाद पूर्वाह्न सभा में तथा सायंकाल में सन्त पुरन्दरदास विषयक हरि-कथा आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

बारिपदा (उड़ीसा): शाखा ने प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, माह के प्रथम तथा तृतीय रविवार को पादुका-पूजा और सत्संग/साधना-दिन तथा अन्य रविवारों को चल-सत्संग पूर्ण किये। शाखा द्वारा कुष्ठरोगियों की एक संस्था में दवाइयाँ दी जाती हैं तथा दिनांक १६ जून को निर्धनों को अन्नदान, दिनांक २१ और २८ मई को वृद्धाश्रम के निवासियों को फल-अन्न दान आदि गतिविधियाँ सम्पन्न की गयीं। श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिनों को आयोजित विविध कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, भजन, कीर्तन, प्रवचन और अकिंचनों को भोजन आदि समाविष्ट थे।

भंजनगर (उड़ीसा): शाखा द्वारा रविवार के सत्संग में पादुका-पूजा, एकादशी के सत्संगों में श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण, श्रीमद् भगवद् गीता के १२ तथा १५ वें अध्याय तथा अन्य स्तोत्र-पाठ भी किये गये। संक्रान्ति-दिन के कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण, 'Ponder These Truths' पुस्तक का स्वाध्याय आदि समाविष्ट थे। श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना दिन को प्रभातीय सत्र में विशेष सत्संग और पादुका-पूजा एवं सायंकालीन सत्र में पूजा, होम, आध्यात्मिक प्रवचन सम्पन्न हुए।

भावनगर (गुजरात): शाखा द्वारा प्रति शनिवार को साप्ताहिक सत्संग, चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा परिचालित हुए। शाखा की, दैनिक योगासन वर्ग, होमियोपैथिक निःशुल्क औषधालय, फल-बिस्कुट के वितरण, कुष्ठरोगियों की एक संस्था

को मासिक आवश्यकतानुसार सूखे राशन का वितरण तथा शिवानन्द पुस्तकालय द्वारा नियमित सेवाओं का सातत्य रहा।

श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना दिन के कार्यक्रमों में दैनिक विशेष सत्संग, भजन-कीर्तन और मन्त्र-जप समस्त नव दिनों को तथा पादुका-पूजा प्रथम और अन्तिम दिन को आयोजित किये गये।

भवानीपाटना (उड़ीसा): शाखा ने प्रति गुरुवार और रविवार को साप्ताहिक द्विवार सत्संग, माह जून और जुलाई में चार चल-सत्संग, प्रति माह के प्रथम रविवार को साधना-दिन और शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा आदि परिचालित किये। शाखा ने स्वामी शिवानन्द जन-सम्पर्क यात्रा आरम्भित की है तथा १९ ग्रामों को भेंट दे कर उनमें से ८ ग्रामों में सत्संग सम्पन्न किये। श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन को पादुका-पूजा के पश्चात्, 'स्वामी शिवानन्द बाल विहार' के बालकों को मिठाइयाँ वितरित हुई। रथयात्रा तथा वापसी रथयात्रा दिनांक ४ और १२ जुलाई को क्रमशः मनायी गयीं तथा उनमें शामिल १५०० आदिवासी प्रतिभागियों को अन्न-प्रसाद दिया गया।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने 'श्री कन्यका परमेश्वरी मन्दिर' में गुरुपूर्णिमा को एक विशेष सत्संग आयोजित किया।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा ने दैनिक द्विवार पूजाएँ और सान्ध्य-सत्संग, दिनांक ८ और दिनांक २६ जुलाई को श्री सुन्दकाण्ड पारायण, योग्य उच्चार सहित सिख धर्मशास्त्र का पाठ आदि मातृ-सत्संग में, शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा और चिदानन्द-दिन को हवन आदि मातृ-सत्संग में परिचालित किये।

श्री गुरुपूर्णिमा को श्री व्यास-पूजा, श्री शंकराचार्य पूजा, पादुका-पूजा और विशेष सत्संग आयोजित हुए। आराधना-दिन के कार्यक्रमों में पादुका-पूजा एवं गुरुदेव के जीवन और उपदेश विषयक प्रवचन आदि प्रमुख थे। दिनांक ३ जुलाई से दिनांक ११ जुलाई पर्यन्त ९ दिवसीय रामायण-पारायण परिचालित किया गया। छात्रों को छात्रवृत्तियाँ, शिवानन्द पुस्तकालय तथा योगासन-तालीम की सामाजिक गतिविधियों का सातत्य रहा।

छत्रपुर (उड़ीसा): दैनिक सत्संग के आधिक्य में शाखा ने प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा तथा संक्रान्ति-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण परिचालित किये। श्री गुरुपूर्णिमा के कार्यक्रमों में प्रभात में पादुका-पूजा तथा सायंकाल में 'गुरुपूर्णिमा-महिमा' विषयक प्रवचन सहित विशेष सत्संग एवं आराधना-दिन के कार्यक्रमों में ब्राह्ममुहूर्त में ४-३० से ५-३० पर्यन्त प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, प्रवचन, भजन-कीर्तन सहित ५ घण्टों का विशेष सत्संग तथा निराश्रितों को अन्नदान और वस्त्रदान आदि समाविष्ट थे। दिनांक १९ जुलाई से दिनांक २५ जुलाई पर्यन्त ३२ प्रतिभागियों के साथ ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान भी सम्पन्न हुआ। शाखा ने दिनांक ८ जुलाई को समीपवर्ती एक ग्राम में एक विशेष सत्संग तथा दिनांक १९ जून को 'माँ सरस्वती शिशु मन्दिर' के उद्घाटन-समारम्भ के अन्तर्गत अन्य एक विशेष सत्संग सम्पन्न किये।

चेन्नै, वाषरमेन पेट (तमिल नाडु): शाखा ने आराधना-दिन कोह्नह्नजो कि शाखा का ३३ वाँ स्थापना-दिन भी थाह्नह्नएक विशेष समारोह श्री रामस्वामी मन्दिर मण्डपम् में आयोजित करके गुरु-पूजा, भजन, स्तोत्र-पाठ, एक आध्यात्मिक प्रवचन आदि सहित विशेष सत्संग सम्पन्न किया।

ढेंकानाल (उड़ीसा): शाखा ने श्री गुरुपूर्णिमा को पादुका-पूजा, आदरणीय श्री स्वामी अर्पणानन्द जी और शाखा प्रमुख द्वारा प्रवचन, प्रभात में प्रसाद-सेवन तथा सायंकाल में भजन और स्वामी जी द्वारा प्रवचन आदि आयोजित किये।

गान्धीनगर (गुजरात): नियमित गतिविधियाँह्नह्नप्रति सोमवार, गुरुवार और शनिवार को सत्संग और स्वाध्याय, दैनिक रूप से प्रभात में योगासन-सभा, सायंकाल में स्त्रियों के लिए योगासन-वर्ग, दिनांक १ जुलाई से दिनांक १० जुलाई पर्यन्त योगासन-तालीम वर्ग, शिवानन्द-दिन को नारायण सेवा, चिदानन्द-दिन को बाल-नारायण सेवा-कुष्ठरोगियों की एक संस्था तथा निर्धन मरीजों को आर्थिक सहाय, शिवानन्द पुस्तकालय और होमियोपैथिक औषधालय।

विशेष गतिविधियाँह्नह्नश्री गुरुपूर्णिमा को पादुका-पूजा और विशेष सत्संग तथा जुलाई माह के दिनांक २२ और दिनांक २६ को चल-सत्संग।

गंगटोक (सिक्किम): शाखा ने श्री गुरुपूर्णिमा के पादुका-पूजा और एक विशेष समारोह आयोजित किये जिसमें २०० भक्त और अनेक महानुभाव प्रतिभागी हुए। शाखा ने ६ दिवसीय महारुद्राभिषेक यज्ञ भी परिचालित किया जिसमें प्रतिदिन शत-शत भक्तों की प्रतिभागिता सहित १,२५,००० बार महामृत्युंजय मन्त्र के उच्चारण किये गये।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): शाखा के दैनिक कार्यक्रमों में प्रभात के ११-०० से मध्याह्न के १२ पर्यन्त ध्यान-सभा, स्टडी-सर्कल में ज्ञान का परस्पर विनिमय तथा परिचर्चा और प्रभातीय तथा सायंकालीन योगासन-वर्ग आदि समाविष्ट हैं। शाखा प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग और हवन, प्रति शुक्रवार को २ घण्टों का मातृ-सत्संग तथा प्रति मंगलवार को नारायण-सेवा सम्पन्न करती है। दिनांक २१ जून से दिनांक २९ जून पर्यन्त नौ-दिवसीय श्री रामायण कथा आयोजित हुई जिसमें प्रतिदिन ५०० भक्त प्रतिभागी हुए। प्रतिदिन एक सन्त-महात्मा को विशेष रूप से आमन्त्रित करके, उन्हें सन्मानित किये गये।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): दैनिक श्री देवी भागवत कथा के आधिक्य में शाखा ने हवन तथा प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति गुरुवार को महामृत्युंजय मन्त्र-जप और ९० मिनटों का सत्संग, प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और सप्ताह के शेष दिनों को सत्संग और स्वाध्याय आदि परिचालित किये। शाखा ने ६८९ मरीजों के जून माह में उपचार सहित होमियोपैथिक औषधालय, दैनिक योगासन वर्ग, स्वामी शिवानन्द आध्यात्मिक पुस्तकालय, २४ विधवा स्त्रियों को रोकड़ दान, ८० छात्रों को छात्रवृत्तियाँ, कुष्ठरोगियों की एक संस्था को उसकी मासिक आवश्यकतानुसार सूखे राशन का वितरणह्नह्न५० किलोग्राम चावल, १५ किलोग्राम तूर दाल, १५ किलोग्राम चीनी, २ किलोग्राम खाद्य-तेल तथा १ किलोग्राम चायपत्तीह्नह्नतथा दैनिक नारायण-सेवा आदि निज समाज-सेवा का सातत्य रखा।

खाटिगुडा (उड़ीसा) : शाखा ने प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, दो चल-सत्संग, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण सहित एकादशी-सत्संग और १२ घण्टों के महामन्त्र के जप सहित मासिक साधना-दिन तथा दिनांक ६ जुलाई को नारायण-सेवा आदि परिचालित किये।

श्री गुरुपूर्णिमा-आराधना दिनह्नह्नश्री गुरुपूर्णिमा को ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान जिसके अनुसरण में संकीर्तन यात्रा, पादुका-पूजा, मध्याह्न भोजन-प्रसाद और 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप आदि तथा आराधना-दिन को प्रभातीय ध्यान, नगर में महामन्त्र कीर्तन यात्रा, पादुका-पूजा, आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी द्वारा प्रवचन, १२ घण्टों पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र-जप आदि सम्पन्न हुए। साधना-सप्ताह में दिनांक २३ जुलाई से दिनांक २६ जुलाई पर्यन्त पूज्य स्वामी जी द्वारा भागवत पारायण और प्रवचन सम्पन्न हुए।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): शाखा ने प्रति रविवार को स्वाध्याय और संकीर्तन सहित साप्ताहिक सत्संग, प्रति एकादशी को अपराह्न में मातृ-मण्डली द्वारा और सायंकाल में पुरुष-वर्ग द्वारा महामन्त्र का जप, दैनिक रूप से प्रभात में पुरुष-वर्ग के लिए और सायंकाल में स्त्रियों के लिए योगासन वर्ग आदि परिचालित किये। दिनांक १ अप्रैल से शाखा एक गरीब और रुग्ण स्त्री को प्रति माह रु. २००/- का दान देती है।

लंगथाबाल (मणिपुर): गुरुपूर्णिमा को एक विशेष सत्संग सम्पन्न हुआ जिसमें एक आध्यात्मिक प्रवचन भी समाविष्ट था।

नवरंगपुर (उड़ीसा): शाखा ने माह मई के दिनांक २८ से ले कर माह जून के दिनांक २ पर्यन्त श्रीमद् भागवत् कथा-यज्ञ आयोजित किया। पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी ने शाखा-परिसर में कुएँ की खनन-विधि के लिए भूमि-पूजा सम्पन्न की। सायंकाल में आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी अमृतानन्द जी, आदरणीय प्रोफेसर जी. रंगाराव जी तथा आदरणीय प्रोफेसर पी.सी. जेना जी आदि ने आध्यात्मिक प्रवचन दिये। श्री गुरुपूर्णिमा को शाखा ने एक विशेष सत्संग भी किया।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दैनिक रूप से स्वामी शिवानन्द भजन-मन्दिर में प्रातः ४-३० से ले कर, २ घण्टों पर्यन्त ब्राह्ममुहूर्तीय सभा परिचालित की जिसमें श्री विष्णु सहस्रनाम, श्री हनुमान चालीसा तथा अन्य स्तोत्रों-श्लोकों के पाठ

किये गये। साथ-साथ प्रति गुरुवार को साप्ताहिक चल-सत्संग, प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण के साथ मातृ-सत्संग, श्री विष्णु सहस्रनाम और श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ सहित एकादशी के मातृ-सत्संग तथा दिनांक ३ जुलाई को ६ घण्टों का महामन्त्र कीर्तन भी परिचालित किये गये। शिवानन्द आश्रम, मुख्यालय के श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन के नौ दिवसीय कार्यक्रमों में शाखा के ४० सदस्यों ने उपस्थिति दी, तथापि शाखा द्वारा भी श्री गुरुपूर्णिमा को पादुका-पूजा तथा आराधना-दिन को हवन और श्री रामायण पाठ भी आयोजित किये। दिनांक ३० जुलाई को भी रुद्राभिषेक तथा हवन सम्पन्न हुए।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा के रविवारीय सत्संगों में प्रमुखतः प्रथम रविवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, द्वितीय रविवार को संकीर्तन और ध्यान, तृतीय रविवार को गुरुदेव के उपदेशों का स्वाध्याय, चतुर्थ रविवार को कोई सन्त द्वारा एक आध्यात्मिक प्रवचन तथा पंचम रविवार को गुरुदेव के उपदेशों विषयक प्रश्न-उत्तर सभा आदि सम्पन्न हुए।

नीमापड़ा (उड़ीसा): शाखा द्वारा दैनिक रूप से एक घण्टे पर्यन्त महामन्त्र कीर्तन, प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा सहित साप्ताहिक सत्संग, तीन चल-सत्संग जिनमें से दो समीपवर्ती ग्रामों में किये गये तथा दिनांक २७ जुलाई को मासिक साधना-दिन आदि परिचालित हुए। शाखा ने दिनांक ४ जुलाई से दिनांक १२ जुलाई पर्यन्त आदरणीय श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज नौ दिवसीय श्री रामायण पारायण और श्री रामायण-कथा आयोजित की थी। श्री गुरुपूर्णिमा के दिनभर के कार्यक्रमों में ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, आदरणीय श्री स्वामी जी और आदरणीय श्री स्वामी सदाशिवानन्द जी द्वारा प्रवचन, श्रीमद् भगवद् गीता पारायण, भजन-कीर्तन, नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन आदि समाविष्ट थे। आराधना-दिन के कार्यक्रमों में प्रभातीय प्रार्थना-सभा, पादुका-पूजा, ६४ भक्तों द्वारा 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र की लक्षार्चना, दो आदरणीय स्वामीजियों तथा आदरणीय पण्डित बैद्यनाथ दास द्वारा गुरु-तत्त्व और स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन तथा उपदेशों विषयक प्रवचन और प्रसाद-सेवन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

राजकोट (गुजरात): शाखा के शिवानन्द भवन में प्रति रविवार को प्रवचन सहित साप्ताहिक सत्संग, प्रति शनिवार तथा गुरुवार को दो अन्य केद्रों पर सत्संग, प्रति शुक्रवार को महिला-केन्द्र द्वारा सत्संग तथा एक सत्संग-केन्द्र पर दैनिक सत्संग आयोजित हुए। एक सत्संग-केन्द्र पर श्री रामचरित मानस पर प्रवचन आयोजित हुए। आदरणीय श्री स्वामी पवित्रानन्द जी ने सत्संग-माहात्म्य विषयक प्रवचन दिया तथा आदरणीय श्री स्वामी सत्यनारायणानन्द जी ने दिनांक २९ मई को योगासन-निर्देशन किया। श्री रामनवमी साधना-दिन के रूप में मनायी गयी।

राजकोट और वांकानेर में होमियोपैथिक औषधालय ने प्रति माह लगभग ५०० मरीजों के उपचार किये। तीन माहों की अवधि में चार निःशुल्क नेत्र-यज्ञ आयोजित हुए। ४१० मरीजों के उपचार हुए और ८७ मरीजों की 'शिवानन्द सेन्ट्रल अस्पताल, वीरनगर' में शल्य-क्रिया सम्पन्न हुई। दिनांक ११ मई को 'सर्व रोग-निदान' निःशुल्क शिविर किया गया। राजकोट के सिविल-सर्जन तथा अनेक विशेषज्ञों ने स्वैच्छिक रूप से निःशुल्क सेवा की। शाखा ने नौ हृदयरोगियों को रुपये २५,००० दिये, मरीजों को रु. ३५०० की आर्थिक मर्यादा में फल वितरित किये, एक विकलांग बाला को एक त्रिचक्री साइकिल प्रदान की तथा अस्पताल के उपयोग के लिए एक स्ट्रेचर और एक पहियेदार कुर्सी का दान दिया।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्रह्नदैनिक द्विवार पूजाएँ, ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, एक घण्टे पर्यन्त 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का कीर्तन, एक घण्टे पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र-जप, त्रिवार श्री हनुमान चालीसा के पाठ, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण इत्यादि सहित प्रभातीय प्रार्थना-सत्र तथा एक घण्टे पर्यन्त अध्ययन-वर्ग सहित सान्ध्य-सत्संग; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति सोमवार को शिव सहस्रनाम का पाठ, दिनांक ६ जुलाई को श्रीमद् भगवद् गीता का पारायण, प्रभात में 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १ घण्टे पर्यन्त उच्चारण तथा पादुका-पूजा और सायंकाल में विशेष सत्संग सहित शिवानन्द-दिन; श्री सुन्दरकाण्ड पारायण दिनांक १२ जुलाई को; दिनांक २२ जून और २० जुलाई को साधना-दिन; दिनांक १३

जुलाई को योगासन और ध्यान-सत्र, शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल (गत दो महिनों में ४९८ मरीजों के उपचार किये गये)।

विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) गुरुदेव का वार्षिक संन्यास-दिन : पादुका-पूजा , 'संन्यास की महिमा' विषयक प्रवचन सहित विशेष सत्संग। (२) संक्रान्ति-दिन : १०८ बार श्री हनुमान चालीसा के पाठह्लह्लभगवान् हनुमान जी पर प्रवचन, प्रसाद-सेवन। (३) दिनांक २९ जून को ३ घण्टों पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र का अखण्ड जप। (४) श्री गुंडीचा उत्सव : भगवान् जगन्नाथ जी की विशेष पूजा, उनके स्तुति, स्तोत्रों तथा श्लोकों आदि का गान तथा पाठ, प्रवचन सहित विशेष सत्संग। (५) श्री गुरुपूर्णिमा : पादुका-पूजा, श्री गुरु-गीता पारायण, तीन घण्टों पर्यन्त महामन्त्र का कीर्तन, ३ प्रवचनों सहित सान्ध्य-सत्संग। (६) आराधना दिन : पादुका-पूजा, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का तीन घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन प्रभात में, 'गुरुदेव का जीवन और उपदेश' विषयक प्रवचन। (७) योग-तालीम शिविरें : दिनांक २३ जून को (१५७ प्रतिभागियों सहित) तथा माह जुलाई के सब सोमवार के दिनों को (४ शिविरों में ७३९ प्रतिभागियों सहित), महर्षि पतंजलि के उपदेशों तथा योगी का पथ्य, स्वास्थ्य और योग, योग का अनुशासन इत्यादि विषयक प्रवचन आदि सहित आदरणीय प्रोफेसर बी. चिन्नारा द्वारा शिविरों का संचालन। (८) दिनांक १९ जुलाई को २००छात्रों के प्रतिभागियों सहित एक माध्यमिक शाला में प्रादेशिक-योग-शिविर।

सम्बलपुर (उड़ीसा): शाखा द्वारा श्री विश्वनाथ मन्दिर में त्रिवार पूजाएँ, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति शनिवार को ध्यान, दो अवसरों पर पादुका-पूजा के साथ विशेष सत्संग तथा शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा आदि परिचालित हुए। प्रति सोमवार को निर्धनों को अन्नदान हुआ। माह जून में ३४० मरीजों के होमियोपैथिक औषधालय द्वारा उपचार किये गये।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियों में प्रति शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग; शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को प्रभात में पादुका-पूजा और विशेष सत्संग सायंकाल में; प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकाल में महामृत्युंजय मन्त्र का ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप।

शाखा ने श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन की नौ दिनों की अवधि को 'साधना-काल' जाहिर किया। शाखा द्वारा प्रति दिन प्रभात में ४-३० को दैनिक संकीर्तन यात्रा, ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, पादुका-पूजा और विशेष सत्संग सायंकाल में तथा इस दिनावधि में श्री हनुमान चालीसा, श्री सुन्दरकाण्ड, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम्, श्रीमद् भागवतम् तथा महामन्त्र और 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का संकीर्तन आदि परिचालित किये। आराधना-दिन की अधिक गतिविधियों में रुद्र-अभिषेक, नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन, गुरुदेव के जीवन पर दृश्य-श्राव्य कैसेट-दर्शन तथा स्वास्थ्य शिविर आदि समाविष्ट थे। शाखा द्वारा सँभाल और देखभाल हो रही है ऐसी कुष्ठरोगियों की एक संस्था के अन्तेवासी अविरत मेघवर्षा के कारण विविध रोग तथा अस्वस्थताओं से त्रस्त थे। शाखा ने उनके लिए मेडिकल स्टाफयुक्त एक स्वास्थ्य-शिविर आयोजित करके उनके योग्य उपचार किये तथा पथ्य-आहार की पूर्ति की।

वडोदरा (गुजरात): शाखा द्वारा प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग तथा शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को मन्त्र-जप और पादुका-पूजा परिचालित हुए। शाखा ने निज होमियोपैथिक और आयुर्वेदिक औषधालयों, एक्युप्रेशर उपचार, कम व्यय में विशेष इलेक्ट्रानिक एक्युप्रेशर उपचार तथा निर्धन और जरूरतमन्द मरीजों को औषधियों के वितरण द्वारा सामाजिक सेवा का सातत्य रखा।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा के पाक्षिक सत्संग दिनांक १३ और दिनांक २७ जुलाई को सम्पन्न हुए। श्री गुरुपूर्णिमा के कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, भजन, आरती तथा प्रसाद-सेवन आदि थे।

विक्रमपुर (उड़ीसा): शाखा द्वारा द्विवार पूजाएँ और उनके पश्चात् प्रार्थनाएँ, दैनिक सान्ध्य-सत्संग, प्रति बुधवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति गुरुवार को मातृ-सत्संग, एक चल-सत्संग तथा पाँच अवसरों पर पादुका-पूजा आदि परिचालित हुए। गुरुदेव की संन्यास-दीक्षा के वार्षिक दिन को श्रीमद् भगवद् गीता पारायण

भी किया गया जो कि माह के प्रथम रविवार को सम्पन्न होता है। दिनांक ८ जून को साढ़े तीन घण्टों पर्यन्त महामन्त्र का अखण्ड संकीर्तन किया गया।

विशाखपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा की नियमित गतिविधियों में महामन्त्र-संकीर्तन और गुरुदेव की पुस्तकों के स्वाध्याय सहित दैनिक सत्संग, प्रति सोमवार को साप्ताहिक सत्संग, श्रीमद् भगवद् गीता के ६ अध्याय के पाठयुक्त एकादशी सत्संग, प्रति सोमवार को आदरणीय डा. नागेश्वर राव जी द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य-परीक्षण और प्रतिदिन प्रभात में डेढ़ घण्टों पर्यन्त योगासन और ध्यान का सत्र।

विशेष कार्यक्रमह्ह(१) श्री गुरुपूर्णिमा : पादुका-पूजा, प्रसाद-वितरण। (२) आराधना-दिन : विशेष सत्संग, गुरुदेव के जीवन पर आधारित वी.सी.डी. द्वारा वीडियो-दर्शन। (३) साधना-सप्ताह : दैनिक विशेष सत्संग तथा दिनांक १९ जुलाई से दिनांक २५ जुलाई पर्यन्त वीडियो-दर्शन और प्रसाद।

विदेशी शाखाएँ

हांगकांग (चीन): माह जून २००८ की अवधि में शाखा ने, द्वितीय शनिवार के सिवा, प्रति शनिवार को एक घण्टे पर्यन्त महामन्त्र-संकीर्तन सम्पन्न किया। नियमित योगासन-वर्ग में १९९ व्यक्ति तथा चार योग सत्रयुक्त कार्य-शिविरों में १९ व्यक्ति प्रतिभागी हुए। दिनांक १४ जून को डी.एल.एस. योग-सेन्टर के स्थापना-दिन के ८ वें वार्षिक दिन को शाखा ने ९१ प्रतिभागियों युक्त योगासनों के निर्देशन सहित Yoga Gala आयोजित किया। चीन मुख्य प्रदेश में सिचाउन-भूकम्प-ग्रस्त जनों के लिए शाखा ने दान दिया।

८०. अपने मन को मोक्ष प्रदाता बना लें

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उन परम पावन श्रद्धेय गुरुदेव को हम प्रणाम करते हैं, जिनकी कृपापूर्ण दृष्टि सदैव आपके ऊपर है, जिनके साथ आपका विगत जन्मों का कुछ अवर्णनीय अथाह कर्म-सम्बन्ध ही प्रतीत होता है; क्योंकि कर्म-सम्बन्ध के बिना इस संसार में किसी भी जीवात्मा का किसी से, किसी भी प्रकार का सम्बन्ध होना सम्भव नहीं है। और यह उच्चतम कोटि का सम्बन्धह्नह्नसर्वोत्तम, सर्वाधिक पावन और आनन्दप्रद सम्बन्ध हैह्नह्नभगवान् और भक्त का, साधक और सन्त का, क्योंकि यही, केवल यही सम्बन्ध है जो मोक्ष प्रदाता है।

अन्य सभी सम्बन्ध दुःख, व्याकुलता, अशान्ति और बन्धन के प्रचुर साधन हैं। इस परिवर्तनशील, नाशवान्, क्षणिक, अस्थिर वस्तु-पदार्थों के सम्बन्धों से उत्पन्न होने वाले सभी अनुभव दुःख का कारण बताये गये हैं। ''**ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते**'' (ये जो विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले सब सुख रूप भासते हैं, यह दुःख के ही हेतु हैं)।

जब व्यक्ति इस मूल सत्य को जान लेता है कि समस्त नाशवान् अस्थायी वस्तुओं के संयोग से उत्पन्न होने वाला दुःख का ही हेतु हैह्नह्नतब ही हमारी अनन्त की ओर की यात्रा आरम्भ होती है। अतः दुःख का भी कुछ उद्देश्य है। गुरुदेव ने कष्टों को नेत्र खोलने का साधन कहा। यह दुःख का कारण होने के साथ ही खोज की ओर ले जाने वाला और भूल सुधारने वाला भी हो सकता है।

दुःख का कारण अस्थायी वस्तु-पदार्थों से सम्बन्ध होना है, और यह मन ही है जो सम्बन्धित वस्तुओं की ओर विचारों द्वारा दौड़ कर सम्बन्ध बनाता है। विचार के द्वारा ही समस्त मानवीय बन्धन, मानवीय दुःखों की उत्पत्ति होती है। और कितना विचित्र विरोधाभास है यह कि विचार द्वारा उत्पन्न इस बन्धन से व्यक्ति केवल विचार ही के द्वारा स्वयं को मुक्त कर सकता है। एक दिशा-विशेष की ओर प्रवाहित हो कर विचारों द्वारा बनायी गयी इस अवस्था से छुटकारा पाने का एकमात्र मार्ग है मन को दृढ़तापूर्वक प्रयत्न करके उस दिशा की ओर ले जाना, जिसमें जाने से यही मन आपका मोक्ष प्रदाता बन जाता है। तब दुःख घटता-घटता फीका पड़ जाता है और फिर पूर्णतया नष्ट हो कर अपना स्थान शान्ति को, और अन्ततः मोक्ष को दे जाता है।

दुःख की पूर्ण निवृत्ति का रहस्य है विचार को यह उद्देश्यपूर्ण दिशा दे देनाह्नह्नव्यावहारिक जगत् की ओर नहीं, परिपूर्णता की ओर; अशाश्वत की ओर नहीं, परम सत्ता की ओर की दिशा। विचार और उसकी दिशा का यह सम्बन्ध ही मोक्ष प्रदान करने वाला है।

इसे जान कर विवेकशील जिज्ञासु समझ जाता हैह्नह्न''अपने मन को और अपने विचारों को दिव्यता

की ओर, अपने मूल स्रोत की ओर समझ-बूझ के साथ ले जाना ही इसका मार्ग है। उस परम तत्त्व की ओर, जो सर्वत्र विद्यमान है, जो निकटतम से भी अधिक निकट है, जो स्वयं मुझसे भी अधिक मेरे समीप है, उसकी ओर अपने मन के विचारों को ले जाना ही इसका मार्ग है। जब भी मेरी इन्द्रियाँ इधर-उधर भागें, मेरा मन वहीं पर, यहाँ तक कि उस वस्तु-पदार्थ में भी दिव्यता को ही देखे।

इस प्रकार अपने अन्तरमन को परिवर्तित करके, मन को नया दृष्टिकोण प्रदान करने के द्वारा अर्थात् नाम-रूपों के भीतर विद्यमान भगवान् को न देखने की अपेक्षा नाम-रूपों को छोड़ कर केवल भीतर विद्यमान परम सत्य को ही देखने के द्वारा, देखने के इस नवीन ढंग को आरम्भ करने के द्वारा तथा भगवान् की अभी और यहीं, सबमें विद्यमानता की जागरूकता के द्वाराह्नह्नव्यक्ति मानसिक स्तर पर ईश्वरीय चेतना की सम्पन्नता की अवस्था में पहुँच जाता है।

यहाँ पर मन अपनी भूमिका पूरी तरह से बदल लेता है। आपको बन्धन की ओर ले जाने की अपेक्षा, अब यह आपको मोक्ष की ओर ले जाने वाला उपकरण बन जाता है। ''**मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः**'' (मनुष्य के बन्धन और मोक्षह्नह्नदोनों का ही मूल कारण केवल मन ही है)। ''भगवान् अभी और यहीं हैं''ह्नह्नयदि आप इस प्रकार सोचते हैं, तो आप भगवान् में ही निवास कर रहे होते हैं। ''मैं इस संसार-बन्धन में फँसा हुआ हूँ''ह्नह्नयदि आप संसार के विषय में इस प्रकार सोचते हैं, तो आप संसार के बन्धन में बँधे हुए होते हैं।

वास्तव में निश्चय तो आप ही ने करना है कि आप अपने मन को भगवान् द्वारा प्राप्त उपहार बनाते हैं या कि इसे एक जाल बना लेते हैं जिसमें फँस कर आप संघर्ष करते रहें। विवेकी जन मन का सदुपयोग करने का निश्चय करते हैं और स्वयं को बन्धन, अन्धकार और दुःखों से मुक्त कर लेते हैं। जो विवेकशील नहीं हैं, जो अज्ञान में स्थित हैं, वह स्वयं को मन द्वारा परिचालित होने देते हैं और भगवान् द्वारा प्रदत्त यह उपहार उनके लिए कष्टों और भारी समस्याओं का स्रोत बन जाता है।

मन को भगवान् का उपहार इसलिए कहा गया है; क्योंकि यह सर्वश्रेष्ठ निधि है। सोचने-विचारने और तर्क-वितर्क की क्षमता ही हमें वह बनाती है, जो हम अब हैं। इसके बिना हम मानवीय स्तर पर रहने योग्य भी नहीं हैं। हमारी पशुओं के स्तर तक अधोगति हो जाती है। किन्तु भगवान् का यह वरदान भी एक भार-रूप बन सकता है, यदि हम स्वयं को अधिकृत कर लिए जाने दे दें, नियन्त्रित कर लिए जाने दे दें। यदि हम इसे स्वयं अपने नियन्त्रण में रखते हैं और अपने अनुसार चलाते हैं, तब यह भगवान् का वरदान बन कर हमें मोक्ष तक ले जाता है।

हमारा और हमारे मन का परस्पर यह सम्बन्ध है। हम मन और इसकी विचार-शक्ति द्वारा ही सम्बन्ध स्थापित करते हैं। क्या हम मन को अपने लिए व्यर्थ के सम्बन्ध स्थापित करने देंगे अथवा हम इसका उपयोग उस परम सम्बन्ध की स्थापना करने में लगायेंगे जिसके द्वारा व्यक्ति यहीं और अभी, इसी शरीर में रहते हुए मुक्त हो जाता है?

यह निर्णय हमें करना होगा। और धन्य है वह व्यक्ति, जो सही निर्णय लेता है! भगवान् हमें सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करें! हम अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं और वरदान प्राप्त किये हुए हैं कि वह हमें परम पावन गुरुदेव के सान्निध्य में लाये हैं, ऐसे गुरुदेव के जिन्होंने 'मन के साथ क्या और कैसे सम्बन्ध हों', इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला है!

हम आशीर्वादित हैं। हम इस धन्यता को पहचानें और इसका उपयोग करें! इसके द्वारा दुःखों से अतीत जायें और आनन्द, शान्ति, परिपूर्णता और मुक्ति में स्थित हो जायें!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज).

१०१. सक्रिय नि:स्वार्थ भाव!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

मोक्ष की ओर का प्रथम पग हैह्नह्नप्राणी मात्र के प्रति नि:स्वार्थ सेवा की साधना में संलग्न हो जाना। यदि हमारी आन्तरिक मन:स्थिति स्वार्थपूर्ण है, तो प्राणी मात्र के प्रति नि:स्वार्थ सेवा कर पाना असम्भव है। जब हम अन्य सभी वस्तु-व्यक्तियों से बढ़ कर अपने-आपको ही प्रेम करते हैं, तब हमारा सम्पूर्ण जीवन स्वार्थ पर ही आधारित होगा। जब यह तथ्य स्पष्टतया समझ में आ जाता है, तब व्यक्ति स्वयं को बन्धन में डालने वाली स्वार्थ-शृंखलाओं से मुक्त करने का प्रयास करता है तथा अपने प्रेम को समस्त संसार के प्रति विस्तारित करता है। भगवान् की सम्पूर्ण सृष्टि, जिसमें जीव, जन्तु, रेंगने वाले जीव, कीट-पतंगे, जलचर, नभचर, यहाँ तक कि हमारे पैरों के नीचे उगने वाली घास के प्रति भी वह अपने प्रेम को विस्तारित करता है।

हम सद्भावना तथा सर्व के भले का केन्द्र बनने का प्रयत्न करते हैं। हमारे ध्यान में लाये जाने के स्तर से निम्न कुछ भी नहीं समझा जाता। क्योंकि सब-कुछ उस महान् रचयिता द्वारा रचा गया है, इसलिए छोटी-बड़ी सभी वस्तुएँ महान् हैं। केवल ऐसे चिन्तन से ही आध्यात्मिक जीवन आरम्भ होता है, क्योंकि जब तक स्व-प्रेम का स्थान सर्व-प्रेम नहीं ले लेता, तब तक स्वार्थपरता पर विजय नहीं पायी जा सकती और जब तक स्वार्थपरता पराजित नहीं होती, तब तक व्यक्ति की अहं-संचालित चेतना से मुक्ति प्राप्त करने की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ सकती। स्वार्थपरता की विपरीत भावना का सक्रिय रूप में अभ्यास करके ही हम स्वार्थ-भावना पर विजय पा सकते हैं।

नि:स्वार्थ भाव का सक्रिय रूप से अभ्यास करना नि:स्वार्थ सेवा कहलाता है। अर्थात् बिना किसी निहित आशय के, कुछ भी कामना न रखते हुए, कुछ भी आशा न करते हुए, यहाँ तक कि प्रशंसा अथवा धन्यवाद की भी आशा न करना। कहते हैं कि वास्तव में नि:स्वार्थ सेवा तो गुप्त रूप से करनी चाहिए। जिसकी सेवा की जा रही है, उसे भी ज्ञात न हो कि कौन सेवा कर रहा हैह्नह्न‘‘आपके बायें हाथ को भी ज्ञात न हो कि आपका दाहिना हाथ क्या कर रहा है।’’ वास्तव में आदर्श सेवा, सर्वोत्तम नि:स्वार्थ सेवा यही है।

यह होना केवल तभी सम्भव हो सकता है, यदि व्यक्ति स्वयं को स्व-प्रेम से मुक्त करके सम्पूर्ण सृष्टि तक उसका प्रसार कर ले। यह प्रेम अवैयक्तिक होता है। यह निर्विषयक और निर्वैयक्तिक प्रेम है। यह दिव्य, आध्यात्मिक अतिमानवीय है, भले ही इसका प्रारम्भ मानवीय स्तर से होता है। यह पूर्णतया आशय रहित, इच्छा रहित प्रेम है। ऐसा प्रेम हो, तो यह चमत्कार कर सकता है। इसमें हमारी अन्तरचेतना में परिवर्तन ला कर पूर्णतया नवीनीकरण कर देने की क्षमता है।

हम अपने हृदय के द्वारा, अपने मन और अपनी दृष्टि के द्वारा भगवान् के द्वारा रची हुई इस सृष्टि को इस प्रकार देखते हैं जैसे भगवान् स्वयं अपनी सृष्टि को देखते हों। यह हम भगवान् की ही अपने में से अभिव्यक्ति करते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम समस्त सृष्टि को प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि भगवान् और प्रेम में अन्तर नहीं है। वह दोनों एक ही हैं।

अत: प्रेम एक ऐसी वस्तु है जो मानवीय मनोभावों और भावनाओं से कहीं अधिक ऊपर, उससे परे है। यह हमारा वह अंग है जो हमारी मानव-प्रकृति का नहीं है, क्योंकि हमारा वास्तविक स्वरूप तो मानवीय नहीं है। हमारा जो भाग परमात्मा का अंश है, वही हमारी वास्तविक पहचान है और यह पूर्णतया दिव्य है। और वह उतना ही प्रेम और दया का सागर है जैसे कि परमात्मा है। इस प्रेम को दया, भलाई, करुणा, लाभ, उपयोग और सेवा-भाव के कार्यों में अभिव्यक्त करना मोक्ष की ओर का प्रथम कदम है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

पावन-स्मृति में

एक महान् देदीप्यमान सितारे का पावन आख्यात

परम आराधनीय परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

वह महान् देदीप्यमान, उज्ज्वल सितारा, जो सम्पूर्ण विश्व-भर में लाखों-करोड़ों लोगों द्वारा श्रद्धा-भक्ति सहित पूजा जाता था, आज सशरीर हमारे बीच नहीं रहा, किन्तु हम सबके हृदय-मन्दिरों में उन्होंने सदा के लिए एक वन्दनीय स्थान बना लिया है।

हम अत्यन्त दुःखी हृदय से अपने हर-मन-प्यारे परमाध्यक्ष परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की गुरुवार, २८ अगस्त को रात्रि के ८ बज कर ११ मिनट पर महासमाधि होने का दुःखद समाचार दे रहे हैं। हम उन्हें, जिनका हमारे पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की दृष्टि में भी अत्यन्त ऊँचा स्थान था, को अत्यन्त विनम्रता और आदरपूर्वक अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज पिछले ३-४ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे; किन्तु जीवन के अन्तिम समय तक दिव्य जीवन संघ के आध्यात्मिक गुरु और परमाध्यक्ष के रूप में किस प्रकार समस्त कार्यभार सतर्कतापूर्वक देखते रहे, यह सभी के लिए अत्यन्त आश्चर्य-जनक था। स्वामी जी महाराज अभी, २४ सितम्बर को अपना ९२ वाँ वर्ष पूर्ण करने वाले थे। अचानक २६ अगस्त को परिस्थितियों ने एक गम्भीर मोड़ लिया और वे अचेतनावस्था (मूर्छा) में चले गये। डाक्टर उनकी स्थिति की निरन्तर जाँच कर रहे थे, अतः जब इसमें सुधार होता दिखायी न दिया को अगले ही दिन उनके निवास-स्थान में ही आई. सी. यू. की समस्त सुविधाएँ उपलब्ध कर दी गयीं। किन्तु जो अवश्यम्भावी था, वह अगले दिन हो कर ही रहा। अतः जैसी कि उनकी तीव्र इच्छा थी कि उनके शरीर को गंगा मैया के पावन जल में सूर्योदय से पूर्व ही प्रवाहित कर देना चाहिए, उसका दृढ़तापूर्वक अक्षरशः पालन करते हुए २९ अगस्त के प्रातः ३-३० बजे ही इस महान् यात्रा की तैयारी आरम्भ हो गयी। स्वामी जी के शरीर को अनेक प्रकार के पुष्पों से सुसज्जित कुर्सी पर बैठा कर गुरुदेव के समाधि मन्दिर से आश्रम के श्री विश्वनाथ मन्दिर के आगे भजन हॉले और श्री विश्वनाथ मन्दिर की परिक्रमा करते हुए गुरुदेव कुटीर के सामने से होते हुएह्नह्नॐ नमः शिवाय, ॐ नमो नारायणाय, ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय और महामन्त्र का कीर्तन करते-करते आश्रम के श्री विश्वनाथ घाट पर ले जाया गया। वहाँ पुरुषसूक्त और नारायणसूक्त के मन्त्रोच्चारण सहित दूध और गंगाजल से महाभिषेक किया गया। इसके बाद नये वस्त्रों, पुष्पहारों, चन्दन, कुमकुम से देह को अलंकृत करके आरती की गयी। स्वामी जी महाराज की इच्छानुसार शरीर को बोरी में डालने से पहले ७

बार 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय', ५ बार महामन्त्र, ५ बार महामृत्युंजय मन्त्र और १६ बार प्रणव मन्त्र ॐ की आवृत्तियाँ की गयीं। उसके पश्चात् वरिष्ठ स्वामी जी तथा आश्रम के अन्य अधिकारी पुष्पों से सुसज्जित दो नौकाओं में स्वामी जी महाराज के शरीर को ले कर गंगा जी के बीच धारा में ले गये और वहाँ जल-समाधि दे दी गयी।

हमारे पाठकों के लिए पूज्य स्वामी जी महाराज के व्यक्तित्व विस्तार से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि उनके जीवनचरित के सम्बन्ध में बहुत कुछ छप चुका है, इसके अतिरिक्त उनके साथ दीर्घ काल तक घनिष्ठ सम्बन्ध रह चुका है, उनके दर्शनों का, उनके श्रीमुख से प्रेरणाप्रद प्रवचन और कीर्तन श्रवण करने का सौभाग्य भी बहुत लम्बे समय तक प्राप्त हो चुका है।

पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का जन्म २४ सितम्बर १९१६ में हुआ। वे अपने माता-पिता की पाँच सन्तानों में द्वितीय थे। उन्हें श्रीधर राव नाम दिया गया। उनके पिता श्रीनिवास राव अनेक गाँवों और जमीन के मालिक एक बड़े जागीरदार थे और उनकी माँ सरोजिनी देवी अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति की विदुषी महिला थीं।

एक सम्पन्न, अनुशासित और आध्यात्मिक प्रेणास्पद वातावरण में पालन-पोषण होने के कारण किशोर श्रीधर राव में बिना प्रयास किये ही उनके मन और बुद्धि में समस्त दिव्य गुण स्वाभाविक रूप से ही आ गये थे। सन् १९३८ में उन्होंने एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी के रूप में मद्रास के सुप्रसिद्ध लोयोला क्रिश्चियन कॉलेज से प्रतिष्ठा सहित स्नातक हुए। इस प्रकार बड़ी सुगमता से उन्होंने ईसाई आदर्शों और सन्तों का ज्ञान प्राप्त कर लिया जिसके परिणाम स्वरूप वे अत्यन्त सहजता से हिन्दू और इसाई धर्म के बीच की समानताओं को जान गये।

सत्य की खोज का अपने हृदय में प्रज्वलित उत्साह लिये हुए वह एक दिन चुपचाप घर से निकल पड़े और दक्षिण भारत में तिरुपति के निकट किसी आश्रम में जा पहुँचे, किन्तु परिवार वालों को पता चल गया और उन्हें वापस लौटा लाये। किन्तु घर में रहते हुए भी युवक श्रीधर ने अपने लक्ष्य को आँखों से ओझल नहीं होने दिया और अपनी साधना में लगे रहे।

कर्नाटक के दक्षिणी प्रान्त के एक नगर मैंगलोर के एक उच्च वर्गीय समाज के सम्भ्रान्त, सम्पन्न और कुलीन परिवार से होने के कारण शुरू से ही उनके स्वभाव में से उदात्तता, उदारता, दयालुता इत्यादि उत्कृष्ट गुण तथा अन्य वह सभी सद्गुण जो किसी व्यक्ति को महिमामण्डित करने वाले हैं, उनमें सहज रूप में ही स्पष्टतया दृष्टिगोचर होते थे। अतः यह कहना कि वह एक निष्ठावान् व्यक्ति थे, एक बहुत ही सामान्य सी ही बात लगती है!

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज १९४३ में शिवानन्द आश्रम में पहुँचे, तब वह श्रीधर राव थे। स्वभाव से ही स्नेहशील होने और संस्था के प्रति प्रेम और समर्पण भाव होने के कारण वह बहुत शीघ्र ही आश्रम में सबके प्रिय बन गये। पूज्य गुरुदेव ने भी उनके भीतर निहित सन्त-स्वभाव को बहुत शीघ्र पहचान लिया। १९४९ में गुरुदेव ने उन्हें सन्त-परम्परा में दीक्षित करके संस्था का महासचिव बना दिया जिसे

उन्होंने पूर्ण अवधि पर्यन्त अत्यन्त विश्वसनीयता से निभाया।

पूज्य स्वामी जी महाराज रोगियों की अत्यन्त सावधानी और प्रेमपूर्वक देखभाल करने तथा कुष्ठरोगियों और आहत या बीमार जीव-जन्तु और पक्षियों तक की ओर विशेष रूप से ध्यान देने के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने अत्यन्त प्रतिभाशाली प्रवचन दिये, मर्मस्पर्शी लेख लिखे तथा एक अत्यधिक शिक्षाप्रद योग-संग्रहालय का निर्माण किया। इन सबने स्वाभाविक ही गुरुदेव से प्रशंसा प्राप्त की और परिणाम स्वरूप गुरुदेव ने उन्हें विश्व-भर में अपना आध्यात्मिक प्रतिनिधि बना कर भेजा।

स्वामी जी महाराज गुरुदेव तथा उनके अन्य शिष्यों सहित १९५० में २ महीने की अखिल भारत तथा लंका की युगान्तरकारी यात्रा पर गये। आश्रम में प्रवेश होने के आरम्भ से ही वह गुरुदेव के सर्वाधिक प्रिय और चयनित शिष्य रहे। आश्रम में कोई भी उच्चाधिकारी अथवा महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठित व्यक्ति या सन्त-महात्मा आते, तो वह उनसे तत्परता से वार्तालाप करने के लिए, वहाँ उपस्थित होते, उन्हें गुरुदेव की अध्यक्षता में चल रही आश्रम की समस्त गतिविधियों से अवगत कराते, उन्हें प्रभावित करते हुए आश्रम के उद्देश्यों और नियमों का वर्णन करते। गुरुदेव को महिमान्वित करने का कोई भी अवसर वह अपने हाथ से जाने न देते। इस प्रकार उन्हें गुरुदेव के अनन्त आशीर्वाद प्राप्त थे।

१९५६ में उनके जीवन में उस समय एक कठिन निर्णयकारी क्षण सामने आ खड़ा हुआ, जब एक दिन गुरुदेव ने उन्हें बुलाया और अपना हृदय उनके सामने खोल कर रखते हुए बताया कि वह स्वामी जी को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते हैं। स्वामी जी महाराज ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक इसका स्पष्ट उत्तर न दे कर यह कहा कि उनकी इच्छा पूर्णतया आध्यात्मिक साधना में लगने की है, जो कि महासचिव के अत्यन्त भारी उत्तरदायित्व को निभाते हुए कर पाने में वह असमर्थ हैं। किन्तु गुरुदेव अपने मन में जानते थे कि पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ही उनके समुचित और सुयोग्य उत्तराधिकारी थे। १९६२ में ऐसा ही अवसर एक बार फिर आया जब गुरुदेव ने पुनः ऐसा ही विचार प्रकट किया जिसे कि उन्हीं कारणों से पूर्ण नहीं किया गया। अब तक यह बात पूर्णतया निश्चित हो चुकी थी कि चयनित उत्तराधिकारी निस्सन्देह रूप से यही हैं। अतः गुरुदेव की यह तीव्र इच्छा कहें, भविष्यवाणी कहें या सत्संकल्प कहें, गुरुदेव की महासमाधि के उपरान्त तब पूर्ण हुई जब अन्य सब बातों के ऊपर वरीयता पा कर अगस्त १९६३ में पूज्य स्वामी जी महाराज विश्वव्यापी संस्था दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष बना दिये गये।

पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी, महासचिव के रूप में पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की सकुशल सहायता से संस्था की बागडोर अत्यन्त दक्षतापूर्वक सँभाले रहे और इसे धीरे-धीरे उत्तरोत्तर उन्नि के शिखरों तक ले गये; अन्ततः गुरुदेव के मिशन को एक शक्तिशाली विश्वव्यापी संस्था, एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का रूप दे दिया, जिसे आप आज देख ही रहे हैं। निस्सन्देह आदर्श गुरु के एक आदर्श शिष्य!

पूज्य स्वामी जी महाराज ने विश्व के प्रत्येक कोने में अनेकों बार भ्रमण किया। जब-जब भी और जहाँ भी उन्हें अवसर मिला, गुरुदेव की जीवन-परिवर्तनकारी शिक्षाओं और उपदेशों को प्रभावशाली ढंग से प्रचार-प्रसार करने में कोई कमी नहीं रहने दी, प्रत्युत उन्होंने गुरुदेव के और उनकी संस्था के लक्ष्य की पूर्ति के प्रति अपने कर्तव्य को अत्यन्त उत्साहपूर्वक निभाते हुए, गुरुदेव के नाम-यज्ञ के प्रकाश को ले कर, असंख्य सुअवसरों को स्वयं बनाते हुए व्यापक रूप से भ्रमण किया।

सहस्रों की संख्या में लोगों को पूज्य स्वामी जी महाराज का सामीप्य प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। उनकी व्यक्तिगत सेवा करने, उनके लिए पत्र-व्यवहार करने, आश्रम के प्रबन्ध के सम्बन्धित कार्यों में सहायता करने अथवा अन्य किसी भी प्रकार के कार्यों (जिनका यहाँ स्थानाभाव के कारण विषद रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता) में अपनी सेवाएँ समर्पित करने का अवसर असंख्य लोगों को मिला है। किन्तु एक बात जिसे किसी भी प्रकार, किसी के द्वारा भी भुलाया नहीं जा सकता, वह है हमारे सम्माननीय महासचिव श्रद्धेय श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज की १९५३, जब से वह आश्रम में आये हैंह्लह्ल५५ वर्ष की विशेष, अथक और अबाध सेवाएँ!

भक्तों की ओर से, आध्यात्मिक विभूतियों की ओर से, विभिन्न आश्रमों के महामण्डलेश्वरों की ओर से तथा विश्व के बहुत से भागों से सुप्रसिद्ध महान् व्यक्तियों की ओर से अनेकों श्रद्धांजलियाँ निरन्तर आ रही हैं। बहुत से प्रसिद्ध समाचार-पत्र तथा दूरदर्शन चैनलों द्वारा पूज्य स्वामी जी महाराज के सम्बन्ध में बताया जा रहा है।

संन्यास-परम्परानुसार १२ सितम्बर को स्वामी जी महाराज का महासमाधि की षोडशी समारोह सम्पन्न होगा। हरि ॐ तत्सत्!

पावन-स्मृति में

एक महान् देदीप्यमान तारे का पावन आख्यान
परम आराधनीय परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

वह महान् देदीप्यमान, उज्ज्वल सितारा, जो सम्पूर्ण विश्व-भर में लाखों-करोड़ों लोगों द्वारा श्रद्धा-भक्ति सहित पूजा जाता था, आज सशरीर हमारे बीच नहीं रहा, किन्तु हम सबके हृदय-मन्दिरों में उन्होंने सदा के लिए एक वन्दनीय स्थान बना लिया है।

हम अत्यन्त दुःखी हृदय से अपने हर-मन-प्यारे परमाध्यक्ष परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की गुरुवार, २८ अगस्त को रात्रि के ८ बज कर ११ मिनट पर महासमाधि होने का दुःखद समाचार दे रहे हैं। हम उन्हें, जिनका हमारे पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की दृष्टि में भी अत्यन्त ऊँचा स्थान था, को अत्यन्त विनम्रता और आदरपूर्वक अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज पिछले ३-४ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे; किन्तु जीवन के अन्तिम समय तक दिव्य जीवन संघ के आध्यात्मिक गुरु और परमाध्यक्ष के रूप में किस प्रकार समस्त कार्यभार सतर्कतापूर्वक देखते रहे, यह सभी के लिए अत्यन्त आश्चर्यजनक था। स्वामी जी महाराज अभी, २४ सितम्बर को अपना ९२ वाँ वर्ष पूर्ण करने वाले थे। अचानक २६ अगस्त को परिस्थितियों ने एक गम्भीर मोड़ लिया और वे अचेतनावस्था (मूर्छा) में चले गये। डाक्टर उनकी स्थिति की निरन्तर जाँच कर रहे थे, अतः जब इसमें सुधार होता दिखायी न दिया तो अगले ही दिन, उनके निवास-स्थान में ही आई. सी. यू. की समस्त सुविधाएँ उपलब्ध कर दी गयीं। किन्तु जो अवश्यम्भावी था वह अगले दिन हो कर ही रहा। अतः जैसी कि उनकी तीव्र इच्छा थी कि उनके शरीर को गंगा मैया के पावन जल में सूर्योदय से पूर्व ही प्रवाहित कर देना चाहिए, उसका दृढ़तापूर्वक अक्षरशः पालन करते हुए २९ अगस्त के प्रातः ३-३० बजे ही इस महान् यात्रा की तैयारी आरम्भ हो गयी। स्वामी जी के शरीर को अनेक प्रकार के पुष्पों से सुसज्जित कुर्सी पर बैठा कर गुरुदेव के समाधि मन्दिर से आश्रम के श्री विश्वनाथ मन्दिर के आगे से भजन हॉल और श्री विश्वनाथ मन्दिर की परिक्रमा करते हुए गुरुदेव कुटीर के सामने से होते हुएह्नह्नॐ नमः शिवाय, ॐ नमो नारायणाय, ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय और महामन्त्र का कीर्तन करते-करते आश्रम के श्री विश्वनाथ घाट पर ले जाया गया। वहाँ पुरुषसूक्त और नारायणसूक्त के मन्त्रोच्चारण सहित दूध और गंगाजल से महाभिषेक किया गया। इसके बाद नये वस्त्रों, पुष्पहारों, चन्दन, कुमकुम से देह को अलंकृत करके आरती की गयी। स्वामी जी महाराज की इच्छानुसार शरीर को बोरी में डालने से पहले ७ बार 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय', ५ बार महामन्त्र, ५ बार महामृत्युंजय मन्त्र और १६ बार प्रणव मन्त्र ॐ की आवृत्तियाँ की गयीं। उसके पश्चात् वरिष्ठ स्वामी जी तथा आश्रम के अन्य अधिकारी पुष्पों से सुसज्जित दो नौकाओं में स्वामी जी महाराज के शरीर को ले कर गंगा जी के बीच धारा में ले गये और वहाँ जल-समाधि दे दी गयी।

हमारे पाठकों के लिए पूज्य स्वामी जी महाराज के व्यक्तित्व का विस्तार से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि उनके जीवनचरित के सम्बन्ध में बहुत-कुछ छप चुका है, इसके अतिरिक्त उनके साथ दीर्घ काल तक घनिष्ठ सम्बन्ध रह चुका है, उनके दर्शनों का, उनके श्रीमुख से प्रेरणाप्रद प्रवचन और कीर्तन श्रवण करने का सौभाग्य भी बहुत लम्बे समय तक प्राप्त हो चुका है।